विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक

देवपुत्र

पौष/माघ २०७३ जनवरी २०१७
ISSN-2321-3981

बगिया में गणतंत्र की,
बचपन खिलता फूल।
देशभक्ति संस्कार ही,
सारे सुख का मूल।।

₹ १५

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

पौष-माघ २०७३ ▪ वर्ष ३७
जनवरी २०१७ ▪ अंक ७

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	१५ रुपये
वार्षिक	:	१५० रुपये
त्रैवार्षिक	:	४०० रुपये
पंचवार्षिक	:	६०० रुपये
आजीवन	:	११०० रुपये

कृपया शुल्क भेजते समय
चेक/ड्राफ्ट पर केवल देवपुत्र लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९,
२४००४३९

e-mail -devputraindore@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

इन दिनों सारे देश में जो विषय सबसे अधिक चर्चा में है वह है नोटबंदी। वैसे यह शब्द कितना सार्थक है इसकी चर्चा आपसे न करते हुए मैं आपसे अपना यह अनुभव बांटना चाहता हूँ कि सारा राष्ट्र जिन बातों से प्रभावित होता है हमारा उनसे सीधा संबंध हो या न हो बच्चे भी उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते। बल्कि मेरा मानना तो है कि उन्हें रहना भी नहीं चाहिए, आखिर बच्चों को राष्ट्र का भावी कर्णधार माना जाता है कल का भाग्य विधाता कहा जाता है। इसी विचार से बालमन की स्वाभाविक सीमा से थोड़ा बाहर जा कर भी मैं कभी-कभी आपसे ऐसे विषय 'अपनी बात' में सम्मिलित करता रहता हूँ।

नोटबंदी की घोषणा के बाद अनेक प्रकार के अनुभवों से पटे रहे समाचार चेनल्स और समाचार पत्र, एटीएम और बैंकों पर लम्बी कतारों के दृश्य भी हमने देखे लेकिन समीक्षाओं, आलोचनाओं व दुष्प्रचारों के इस दौर में भी कुछ उदाहरण ऐसे सामने आए जिन्हे याद रखना हमारे नैतिक आदर्शों को बल प्रदान करता है। जिन्हे देखकर लगा कि जैसे धुंआ धक्कार भरे दम घोटू वातावरण में ताजा हवा का झोंका तैर गया है। यह उदाहरण प्रस्तुत हुए थे आप बच्चों की ओर से। जी हाँ! जब छोटे नोटों की अनुपलब्धता से लोग परेशान थे बच्चों ने अपनी छोटी-छोटी गुल्लकें फोड़कर चिल्लर की समस्या अपने स्तर पर सुलझाने का स्वप्रेरित उपाय खोज लिया।अपने परिवार के लिए ही नहीं अपरिचितों के लिए भी। टी.वी. पर देखे हैं हमने ऐसे दृश्य। निश्चित ही यह 'ऊँट के मूँह में जीरा' जितना ही था। पर देश में, समाज में, हमारे आसपास के लोगों में कोई समस्या उपस्थित हो और हम आलोचनाओं या घबराहटों के बीच समाधान खोजने की पहल करें यही तो सच्ची मानवीयता है। इसी सकारात्मकता से जीवन को उचित दिशा मिलती है। जितनी प्रशंसा की जाए इन नन्हें बच्चों के नन्हें बैकों की उतनी कम है। जब बड़े-बड़े बैंकों के दम फूल रहे थे इन नन्हे बच्चों की गुल्लकें देश में हो रहे व्यापक परिवर्तन के पक्ष में अपनी सर्वस्व निधि न्योछावर करने को तत्पर थी। एक ओर इस विषम परिस्थिति में 'देने का सुख' लूटकर वे प्रसन्न थे तो दूसरी ओर आपकी भावनाएं देखकर भारत माता भी मुस्करा उठी होंगी।

बच्चो! सेतुबंध में गिलहरी के योगदान जैसा आपका यह सहयोग इस गणतंत्र के संस्कार में बहुत महत्वपूर्ण माना जाएगा। हमेशा बनाए रखिए ऐसी सूझ, ऐसी समझ, यह भावना।

आपका
बड़ा भैया

अनुक्रमणिका

कहानी

- बादल की सैर - डॉ. शशि गोयल ०५
- बहादुर बेटी - डॉ. राजीव गुप्त ०८
- भारत माँ का परिवार - डॉ सत्यदेव आजाद १२
- वीर सिपाही - सुधा भार्गव १८
- हार नहीं मानूंगा - डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' २८
- एकता में है बल - सुधा विजय ४०

अनुवाद

- भलाई की जीत - शिवचरण मंत्री ३२

लघुकथा

- कीमत - मीरा जैन १५

कविता

- मैं कितना सुंदर हूं - रावेन्द्र कुमार 'रवि' ११
- लाल बहादुर शास्त्री... - डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ २०
- भारत देश - डॉ. चक्रधर नलिन २१
- राष्ट्रध्वज - श्याम गुप्ता 'दर्शना' २६
- जाड़ा - अनंत प्रसाद 'रामभरोसे' ३८
- मौसम के फूल - कृष्ण 'शलभ' ३९
- सर्द बस्ते - डॉ. हरीश निगम ४७
- सूरज का रथ - बाल स्वरूप 'राही' ५१

प्रेरक प्रसंग

- निडर नरेन्द्र - गंगाराम शर्मा ०७
- गुरुदेव की... - श्यामसुन्दर सुमन ०९
- जैसा पुत्र वैस पिता - सांवलाराम नामा ३०
- पवित्रता - डॉ. श्याममनोहर व्यास ५०

स्तम्भ

- गाथा वीर शिवाजी... - १६
- आपकी पाती - २६
- हमारे राज्य पुष्प - डॉ. परशुराम शुक्ल ४२
- कॅरियर - डॉ. जमनालाल बायती ४४
- पुस्तक परिचय - ४८

बाल प्रस्तुति

- महिनों का गीत - योगिता नेताम १०
- जंगल में क्रिकेट - आशीष त्यागी २३
- शपथ - वर्णिका जैन ३६
- पहेलियां - दीपक परमार ४९

बाल प्रस्तुति

- बच्चों की खुशियाँ - देवांशु वत्स २४
- राम की बहादुरी - देवांशु वत्स ४३

बादल की सैर

कहानी : डॉ. शशि गोयल

चीनू उसका प्यारा का नाम था। नाम था चिन्मय पर सब चीनू चीनू कहते तो अंशुल उसे चीनी कहता। वह चिढ़ जाता और उससे कहता– ''गिन्नी।''

गिन्नी कहता– ''अरे वाह! मैं बहुत कीमती हूँ।'' तो चीनू हंस देता। गिन्नी का असली नाम गनपति था पर गनपति नाम किसी को बताता भी नहीं था क्योंकि वह जरा मोटा भी था सब चिढ़ाने लगते। मुश्किल यह भी थी चीनू की कोठी और उसके कोठी आमने सामने थी। चीनू के घर माँ जाने देती चीनू भी उसके घर आ जाता, उसके संग खेलता पर उसकी कोशिश रहती कि वह चीनू को तंग भी करे इसके लिए कोई न कोई उपाय सोचता रहता।

एक दिन चीनू अपनी पतंग में कन्ने बांध रहा था एक तरफ तीन अंगुल एक तरफ चार अंगुल अभी उसने गांठ मारी भी नहीं थी कि माँ ने आवाज लगा दी। चीनू उठकर गया गिन्नी ने किनारे घास के तिनके दबा दिए और गांठ जल्दी दाब दी।

चीनू ने पतंग उड़ायी वह उड़ ही नहीं और दो बार ऊपर उठाने में ही फट गई। गिनी को बड़ा मजा आया, कौन चीनू उसे उड़ाने देता, वह तो चरखी ही पकड़ता।

''चल चीनू गिट्टी फोड़ खेलते हैं...'' गिनी ने छोटे छोटे पत्थर जमा किए। ''चल'' चीनू गेंद लेने अंदर भागा।' जरा देर में वापस आया।

''मेरी गेंद तो कल छत पर चली गई। छत पर ताला लगा है माँ सो रही है।'' चीनू बोला उसके हाथों में बुलबुले बनाने का सामान था। चीनू को बुलबुले बनाने का बहुत शौक था वह जब भी बाजार जाता तरह तरह के बुलबुले बनाने के खिलौने ले आता। बुलबुले बनाता साथ ही सीटी की तेज आवाज निकलती। बड़ा मजेदार है पर साबुन का

घोल तो खत्म हो गया है। उसने माँ को आवाज लगाई– ''माँ थोड़ा साबुन दो न।''

''ऊफ! चीनू तंग मत करो सोने दो।'' माँ की झुंझलाई आवाज आई।

''मैं गेंद अपने घर से लाता हूँ'' गिनी भागा।

चीनू ने देखा बाल्टी में साबुन घुला है और पास में कपड़े रखे हैं। कपड़े धोने वाली अभी नहीं आई है उसने बाल्टी में ही बुलबुल बनाने शुरु कर दिए।

''अरे! यह क्या इतना बड़ा बुलबुला'' वह खुश हो गया...यह तो बढ़ता ही जा रहा है कितना चमकदार बड़ा धूप में उसमें सात रंग दिख रहे थे। वह उत्साह से भर उठा उसने एक और बनाया दूसरा बनाया तीसरा बनाया एक के ऊपर एक बनाता चला गया। बुलबुले ऊपर बहुत ऊपर आकाश में पहुँच गए जैसे अनेकों इंद्रधनुष के गुब्बारे हों। चीनू एक गुब्बारे पर चढ़ा दूसरे गुब्बारे पर चढ़ा वह ऊपर चढ़ता चला गया। चढ़ते–चढ़ते आकाश में पहुँच गया। आह! नीचे तो घर कितना छोटा दिख रहा है अरे! विद्यालय भी दिख रहा है वह खुश हो गया। एक बादल पास से गुजरा, हाय क्लाउडी वह चिल्लाया।

बादल ने उसे देखा और ताली बजाने लगा, हाय चीनू... घूमने चलोगे मैं नदी की ओर जा रहा हूँ...।

''मुझे यहीं छोड़ दोगे...वापस''

''नहीं मैं तो फिर आगे बढ़ जाऊंगा तुम्हें नदी पर छोड़ दूँगा।'' क्लाउडी ने कहा।

''वहाँ से कैसे आऊँगा...मैंने तो रास्ता नहीं देखा...''

तभी वहाँ से चूँ चूँ चिड़िया निकली।

''चूँ चूँ चिड़िया मुझे नदी से रास्ता बता दोगी...मैं बादल पर सैर कर लूं...'' चीनू ने चूँ चूँ चिड़िया से पूछा

''चीनू में बता तो देती पर बादल और भी आ रहे हैं... अगर बरस गए तो मेरे पंख गीले हो जाएंगे मैं उड़ नहीं पाऊँगी....मेरे बच्चे इंतजार करेंगे...' चूँ चूँ चिड़िया बोली।

चीनू ऐसा करो जरा देर के लिए यहीं तुम मेरी सैर कर लो फिर अगली बार ले चलूँगा।

'ठीक है क्लाउडी...' चीनू बादल के ऊपर बैठ गय। ठंडा ठंडा बादल नरम सेमल की रुई का पहाड़ सा लग रहा था उसमें वह कूदने लगा उसे बहुत मजा आ रहा था...फिर उसे तेज ठंड लगने लगी।

'क्लाउडी, मुझे बुलबुले पर उतारो मुझे तो बहुत ठंड लग रही है, पर बहुत मजा आया।' क्लाउडी ने उसे बुलबुले पर उतार दिया और बाय बाय करता आगे बढ़ गया।

चीनू ने सोचा चलो अब उतरा जाये शाम होने लगी है अंधेरा हो जाएगा। पर चढ़ तो आया था नीचे देखा तो अब उसे डर लगा। तभी उसने देखा नीचे गिनी खड़ा है उसके हाथ में बड़ी सी नोक वाली सलाई है वह जोर से हंस रहा था।

'गिनी नहीं गिनी नहीं मैं गिर जाऊंगा' वह चीखा पर गिनी ने सलाई की नोक सबसे बड़े बुलबुले में चुभा दी बुलबुला फूटा धड़ाम और एक के बाद एक सभी बुलबुले इधर उधर बिखर गये वह धड़ाम से जमीन पर गिरा। ''हाय माँ गिनी ने मुझे गिरा दिया।''हाय माँ!'' करता वह चिल्लाया।

''क्या बात हुई? क्या बात हुई?'' कहती माँ ने उसे उठाया ''क्यों गिनी क्या किया? तूने? बेटा! इसे तू बहुत तंग करता है।'' माँ ने उसे जमीन से उठाते हुए कहा।

''मैंने कुछ नहीं किया, मैं तो घर से गेंद लेकर आया तो यह बेंच पर से सोते नीचे गिर पड़ा और चिल्लाने लगा गिनी ने गिरा दिया गिनी ने गिरा दिया।''

''हे भगवान! तुझे सपने में भी गिनी दिखाई देता है वैसे लड़ते रहते हो...चलो अब अंदर चलो मैंने तरबूज का शरबत बनाया है...''

पर चीनू अपनी कमर सहलाते सोच रहा था कुछ भी हो पर बादल की सैर में मजा तो बहुत आया था।

● आगरा (उ.प्र.)

स्वामी विवेकानंद जयंती : १२ जनवरी

निडर नरेन्द्र

प्रेरक प्रसंग : गंगाराम शर्मा 'आचार्य'

स्वामी विवेकानंद (नरेन्द्र)को बालपन में पेड़ पर चढ़कर उसकी शाखाओं पर विभिन्न मुद्राओं में खेलना, झूलना तथा एक डाली से दूसरी डाली पर कूदना अच्छा लगता था। उसके मित्र के घर एक वृक्ष था जिस पर अधिक फूल लगे थे। वहाँ वह वृक्ष चढ़कर फूलों को चुनता उसकी शाखाओं पर मलखम्ब की तरह विभिन्न मुद्राएँ करता, झूलता तथा बन्दर की तरह एक डाली से दूसरी डाली पर कूदता था। उसके मित्र वृक्ष के नीचे खड़े होकर यह सब देखते थे और सोचते थे कि यह गिर न जाए नहीं तो इसकी हड्डी पसली टूट जाएगी। वृक्ष पर चढ़ने तथा कूदने की बात एक मित्र ने नरेन्द्र के दादाजी से कह दी। नरेन्द्र जब घर आया तो उसके दादा जी ने कहा– नरेन्द्र! तुम जिस वृक्ष पर चढ़ते हो उस पर एक पिशाच (भूत) रहता है। जो कोई उस पर चढ़ता है पिशाच उसका गला को पकड़ कर मार डालता है। नरेन्द्र को ऐसा कहते हुए सभी मित्रों ने सुना उन्होंने सोचा दादाजी की इस बात से निश्चित ही डर जाएगा और वह पेड़ पर नहीं चढ़ेगा।

नरेन्द्र पर दादा जी की बात का कोई असर नहीं हुआ। वह निर्भय होकर पुनः पेड़ पर चढ़ गया। मित्रों के रोकने पर भी वह नहीं रुका। नरेन्द्र ने अपने डरे हुए साथियों से कहा– ''तुम सब मूर्ख हो। यहाँ पिशाच रहता है यदि यह सत्य है तो आज तक उसने मुझे क्यों नहीं मारा? सभी मित्र एक दूसरे का मुँह देखने लगे। स्वामी विवेकानंद की एक सूक्ति है–'' उत्साह युक्त निर्भय जीवन ही आध्यामिक जीवन का प्रारम्भिक लक्षण है।''

● तलेन (म.प्र.)

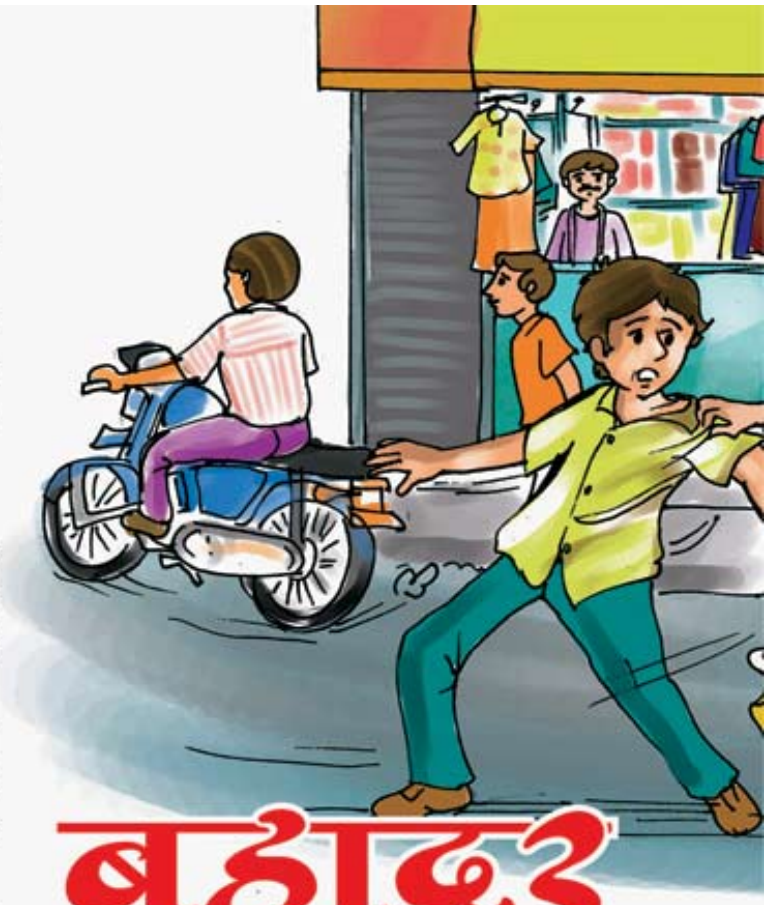

बहादुर बेटी

कहानी : डॉ. राजीव गुप्ता

प्रभुदयाल जी को बैंक से दो लाख रुपए निकालने थे। उनकी बड़ी बेटी मुक्ता की शादी थी। उन्हें उसके लिए गहने बनवाने थे। इसीलिए उन्हें एक साथ इतने रुपयों की जरूरत आ पड़ी थी।

जब वह बैंक के लिए निकले तो उनकी छोटी बेटी लता भी उनके साथ हो ली। वह १५ साल की थी। उसे भी बाजार से अपने लिए कपड़े व श्रंगार का सामान खरीदना था। आखिर दीदी की शादी जो थी।

प्रभुदयाल जी के बस दो बेटियां ही थीं।

करीब १२ बजे प्रभुदयाल बैंक से रुपए निकाल कर निकले। उन्होंने रुपए एक थैले में रख लिए थे। पांच-पांच सौ के नोटों की चार गड्डियां थी। वे लता से बातें करते हुए चल रहे थे।

तभी दो युवक भी बैंक से निकले और अपनी मोटरसाइकिल लेकर चल पड़े। वे प्रभुदयाल का पीछा कर रहे थे। वे बैंक से ही उनकी हर गतिविधि को बड़े ध्यान से देख रहे थे।

प्रभुदयाल जी जैसे ही एक गली के सामने से गुजरे, मोटरसाईकिल पर पीछे बैठे लड़के ने उन्हें धक्का देते हुए उनके हाथ से थैला छीन लिया। वे बेचारे वहीं लड़खड़ा कर गिर गए।

लता एकदम से सारी स्थिति समझ गई। उसने बड़ी ही हिम्मत से काम लिया और बिना एक क्षण भी गवांए पीछे बैठे लुटेरे की शर्ट पकड़ कर जोर का झटका दिया। जिससे मोटरसाइकिल का संतुलन बिगड़ने से वे नीचे गिर पड़े और उसके हाथ से थैला छूट गया।

इस घटना से वे दोनों बुरी तरह से घबरा गए। उनकी हड़बड़ाहट का फायदा उठाते हुए लता उन पर बुरी तरह से हावी हो गई और उन पर लात-घूंसे बरसाने लगी। वह अपने विद्यालय में जूड़ो-कराटे सीख रही थी।

लुटेरे थैला उठाने का प्रयास करते हुए उठने की कोशिश करने लगे। लेकिन तभी लता ने उन में से एक के हाथ में काट खाया और जोर-जोर से 'बचाओ-बचाओ' चिल्लाने लगी। तब तक प्रभुदयाल जी भी खुद को संभाल चुके थे। उन्होंने भी थैला अपने कब्जे में लेते हुए दूसरे लुटेरे की धुनाई करना शुरु कर दी। पर दोनों लुटेरे युवा और हृष्ट-पुष्ट थे। वे किसी भी तरह उनके काबू में नहीं आ रहे थे।

एक किशोरी को दो गुंड़ों से भिड़त देखकर आसपास के दुकानदारों में भी हिम्मत आ गई। वे लुटेरों की तरफ लपके। इस बीच लुटेरे पुनः थैली छीनने में कामयाब हो चुके थे। पर खुद को घिरता देखकर वे मोटरसाइकिल वहीं छोड़कर पैदल ही भाग खड़े हुए। पर दुकानदारों ने पीछा करके उन्हें पकड़ लिया।

प्रभुदयाल को उनका बैग वापिस मिल गया।

वे सब लोग लुटेरे को पकड़ कर कोतवाली ले गए।

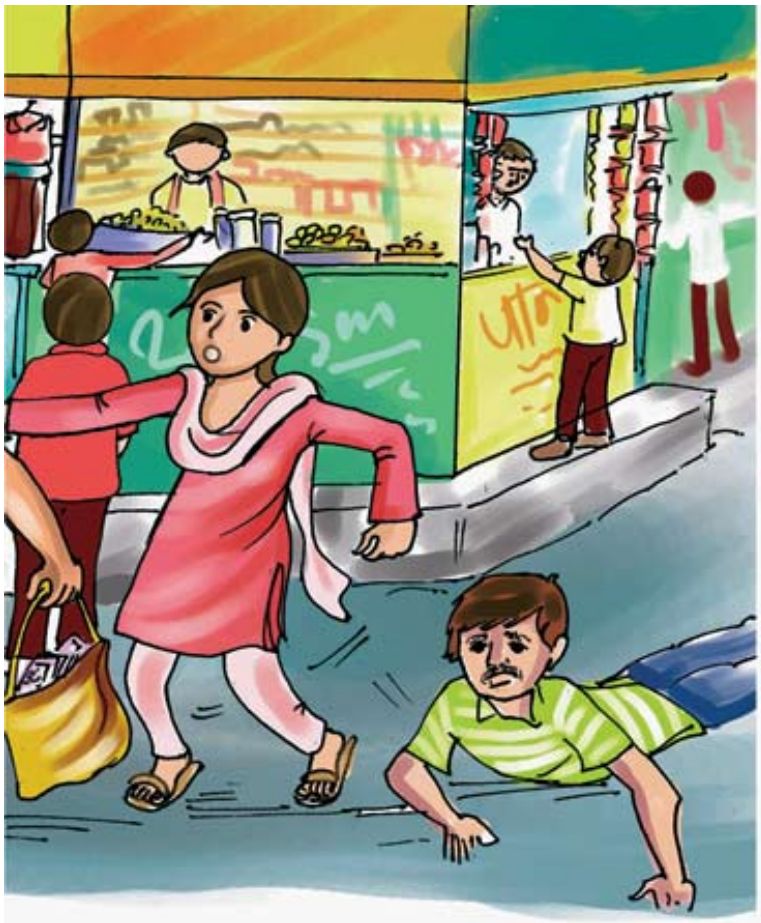

थानेदार ने लता की प्रशंसा करते हुए कहा–''वाह! बेटी, शाबाश! ऐसे मौकों पर तो प्रायः पुरुष भी घबरा जाते हैं। तुम ने बहुत ही बहादुरी से लुटेरों का सामना किया है। तुम ईनाम की हकदार हो, इसके साथ-साथ उन्होंने उन दुकानदारों की भी प्रशंसा की जिन्होंने लुटेरों को पकड़ा था।

प्रभुदयाल जी को अपनी बेटी पर बहुत ही गर्व हो रहा था। उन्होंने अपनी बहादुर बेटी को गले से लगाते हुए पूछा–''बेटी, तुम्हें लुटेरों से भिड़ते हुए डर नहीं लगा?''

लता ने हंसते हुए कहा– ''पिताजी आप ही तो हमेशा कहते हैं कि अन्य लोग भी केवल उसी की मदद करते हैं, जो अपनी मदद स्वयं करता है। देखिए न, मुझे अकेले लुटेरों से भिड़ते देख कर कितने सारे लोग मेरी मदद को आ गए। अगर मैं ऐसा न करती तो ये सब लोग बस तमाशा ही देखते रहते और लुटेरे रुपए लेकर भाग जाते।''

लता की हिम्मत और आत्मविश्वास भरी बातें सुनकर प्रभुदयाल जी का सीना गर्व से फूल कर दुगुना हो गया।

● फर्रुखाबाद (उ.प्र.)

गुरुदेव की विनोदप्रियता

प्रेरक प्रसंग : श्यामसुन्दर सुमन

रवीन्द्रनाथ ठाकुर प्रकृति प्रेमी व शिक्षाशास्त्री के साथ ही विनोदप्रिय भी थे। एक बार उनकी आंखें दुखने लगी। उनकी आँखों में दवा डालने की जिम्मेदारी उनके सचिव की धर्मपत्नी श्रीमती रानी को सौंपी गई। चिकित्सक के परामर्श के अनुसार हर ६ घण्टे बाद गुरुदेव ठाकुर की आंखों में दवा डालनी थी। दवा प्रभावी व तेज थी। इतनी तीव्र कि आँखों में आँसू आ जाते थे। दवा डालने के बाद थोड़ी देर तक जलती रहती थी। गुरुदेव ठाकुर श्रीमती रानी को जब भी दवा की शीशी हाथ में लिए अपने सम्मुख खड़े देखते तो तपाक से कहते– ''आ गई मुझे रुलाने, मुझे रुलाकर आपको कौन सा संतोष मिलता है?''

गुरुदेव ठाकुर की जीवनी जब कभी भी लिखी जाए तो लिखे– ''एक महिला गुरुदेव को आठ-आठ आँसू रुलाती थीं और वह साहसी महिला थी श्रीमती रानी।

● भीलवाड़ा (राज.)

।। बाल प्रस्तुति ।।

महिनों का गीत

कविता : योगिता नेताम

जनवरी में जाड़ा है पड़ता,
स्वेटर पहन निकलना पड़ता।
माह फरवरी लगे बसंत,
जाड़े का हो जाता अन्त।
मार्च लगे आमो पर मौर,
मधुर गंध फैली चहुँओर।
अप्रैल में देना इम्तहान,
पढ़-लिखकर हम बनें महान।
मई महिना छुट्टी लाया,
गर्मी का अब मौसम आया।
जून पके डालों पर आम,
अब तो छुट्टी हुई तमाम।
फिर से आया वही जुलाई,
नए जोश में पढ़ना भाई।
अगस्त माह वर्षा ले आता,
आजादी के गीत सुनाता।
धूप तेज लगा सितम्बर,
मेघ सहित है नीला अम्बर।
अक्टूबर मनवाएं दशहरा,
दीवाली का पर्व सुनहरा।
माह नवम्बर कहता भाई,
धीरे-धीरे ठण्डक आई।
किन्तु दिसम्बर खूब कंपाए,
बर्फीली हो तेज हवाएं,
यू हम गीत वर्ष का गाते,
पल-पल आगे बढ़ते जाते।

● सांकरी (छ.ग.)

मैं कितना सुंदर हूँ

कविता : रावेन्द्रकुमार 'रवि'

मैं कितना सुंदर हूँ साथी,
देखो मुझको ध्यान से।
प्यार भरी बातें करता हूँ,
मैं अपनी मुस्कान से।
मैं कितना सुंदर हूँ...
आसमान में उड़ती चूँ-चूँ
चिड़िया मुझको भाती है।
मेरा गाल चूमकर बिल्ली
मुझे प्यार कर जाती है।
पूँछ हिलाकर, मूँछ नचाकर,
म्याऊँ करती शान से।
मैं कितना सुंदर हूँ...
इधर दौड़ता, उधर दौड़ता,
हरदम खेला करता हूँ।
'फिकर' नहीं मुझको जाड़े की,
सदा मस्त मैं रहता हूँ।
माँ ने है टोपा पहनाया,
हवा घुसे ना कान से।
मैं कितना सुंदर हूँ...

• खटीमा (उत्तराखण्ड)

भारत माँ का परिवार

कहानी : डॉ. सत्यदेव आजाद

एक राजा था बहुत धनवान। वह अपने परिवार का, अपने मेहमानों का, अपने मित्रों का सब का बहुत ख्याल रखता था, सब की देखभाल करता था। उसका घर अत्यंत सुन्दर और तरह तरह की चीजों से भरा था। इस राजा के दो बेटे थे जो आपस में खूब बोलते थे। हंसते थे दिनभर उनका साथ छूटता नहीं था, क्योंकि वह हर काम साथ करते थे इसलिए एक से ही दिखते थे। कुछ समय बाद वह लड़के बड़े हो गए। जब वह काफी बड़े हो गए और उनका अपना परिवार हो गया तो उस घर में रहने वालों की संख्या बढ़ गई। जहाँ दो ही बेटे थे, वहा अब कई सारे पोते और पोती भी थे।

राजा ने इन दोनों परिवारों को एक एक कमरा रहने के लिए दे दिया, जिसमें वह आराम से रह सकें लेकिन धीरे-धीरे इन दोनों परिवार का आपस में मिलना जुलना कम हो गया और वह यह भूलने लगे कि अलग अलग कमरे में रहते हुए भी वह एक ही परिवार है। अच्छा अब यह तो मानी हुई बात है, कि जहां बहुत सारे आदमी होंगे वहां शोर भी बहुत होगा, परेशानी भी अधिक होगी। सो उस घर में भी यही हुआ। हर समय शोर हंगामा रहने वाला एक व्यक्ति सोता तो दूसरे को जागने का मन होता। एक का आराम का मन होता तो दूसरे का खेलने का। इसका परिणाम यह हुआ कि बहुत गड़बड़ी होने लगी।

इस गड़बड़ी से परेशान होकर बड़े बेटे ने सोचा कुछ करना चाहिए कुछ नियम बनाने चाहिए जिससे सबको आराम मिले। उसने काम करने का, खेलने का, सोने का सब का समय तय कर दिया फिर उसने यह भी तय किया कि कौन क्या काम करेगा? कौन सी चीज कहाँ रखी जाएगी? इतने लोगों के रहने से घर के अन्दर और बाहर दोनों जगह सफाई होनी चाहिए। बात सबकी समझ में आ गयी और बड़े उत्साह से सभी अपने-अपने काम में लग गये। छोटे भाई ने भी अपना घर साफ किया और सजाया। घर साफ करने में जो

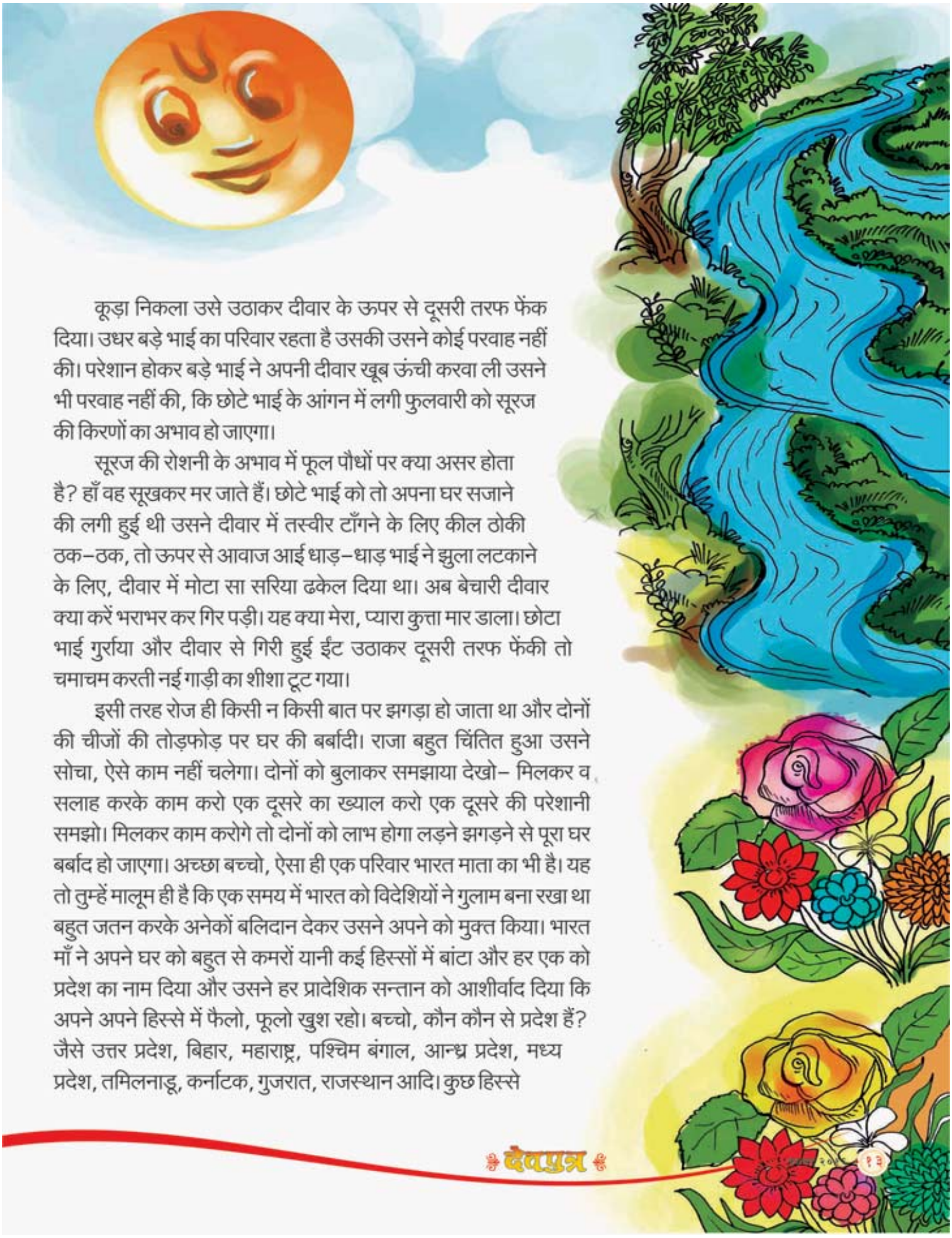

कूड़ा निकला उसे उठाकर दीवार के ऊपर से दूसरी तरफ फेंक दिया। उधर बड़े भाई का परिवार रहता है उसकी उसने कोई परवाह नहीं की। परेशान होकर बड़े भाई ने अपनी दीवार खूब ऊंची करवा ली उसने भी परवाह नहीं की, कि छोटे भाई के आंगन में लगी फुलवारी को सूरज की किरणों का अभाव हो जाएगा।

सूरज की रोशनी के अभाव में फूल पौधों पर क्या असर होता है? हाँ वह सूखकर मर जाते हैं। छोटे भाई को तो अपना घर सजाने की लगी हुई थी उसने दीवार में तस्वीर टाँगने के लिए कील ठोकी ठक–ठक, तो ऊपर से आवाज आई धाड़–धाड़ भाई ने झुला लटकाने के लिए, दीवार में मोटा सा सरिया ढकेल दिया था। अब बेचारी दीवार क्या करें भराभर कर गिर पड़ी। यह क्या मेरा, प्यारा कुत्ता मार डाला। छोटा भाई गुर्राया और दीवार से गिरी हुई ईंट उठाकर दूसरी तरफ फेंकी तो चमाचम करती नई गाड़ी का शीशा टूट गया।

इसी तरह रोज ही किसी न किसी बात पर झगड़ा हो जाता था और दोनों की चीजों की तोड़फोड़ पर घर की बर्बादी। राजा बहुत चिंतित हुआ उसने सोचा, ऐसे काम नहीं चलेगा। दोनों को बुलाकर समझाया देखो– मिलकर व सलाह करके काम करो एक दूसरे का ख्याल करो एक दूसरे की परेशानी समझो। मिलकर काम करोगे तो दोनों को लाभ होगा लड़ने झगड़ने से पूरा घर बर्बाद हो जाएगा। अच्छा बच्चो, ऐसा ही एक परिवार भारत माता का भी है। यह तो तुम्हें मालूम ही है कि एक समय में भारत को विदेशियों ने गुलाम बना रखा था बहुत जतन करके अनेकों बलिदान देकर उसने अपने को मुक्त किया। भारत माँ ने अपने घर को बहुत से कमरों यानी कई हिस्सों में बांटा और हर एक को प्रदेश का नाम दिया और उसने हर प्रादेशिक सन्तान को आशीर्वाद दिया कि अपने अपने हिस्से में फैलो, फूलो खुश रहो। बच्चो, कौन कौन से प्रदेश हैं? जैसे उत्तर प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, आन्ध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, तमिलनाडू, कर्नाटक, गुजरात, राजस्थान आदि। कुछ हिस्से

केन्द्र संचालित हैं उनके नाम है दिल्ली, गोआ, दादरा और नगर हवेली, पुदुच्चेरी आदि। अब इस विशाल भारत में कहीं की मिट्टी अच्छी हैं, तो कहीं का पानी, कहीं गहरे घने जंगल हैं तो कहीं पृथ्वी के गर्भ में कोयला और तेल छिपा है।

हिमालय की गोद में उपजी गंगा, सैर को निकली तो पहाड़ों पर उछलती कूदती, पहले आयी उत्तर प्रदेश के मैदान में, और वहां से अपना टेढ़ा मेढ़ा रास्ता बनाती हुई बंगाल की खाड़ी तक चली गयी समुद्र से मिलने। बीच में जितने भी प्रदेश आये उन सभी की धरती को सींचकर उसने उपजाऊ बनाया क्योंकि वह किसी एक की नहीं, पूरे भारत की है।

इसी तरह सतलुज नदी पर बने भाखरा बांध की बिजली केवल पंजाब के लिए नहीं वरन दिल्ली राजस्थान, उत्तर प्रदेश सभी के लिए है। कहीं खाद की फैक्टरी है तो किसी प्रदेश में मोटर कार बनाने के कारखाने आसाम में चाय बागानों की चाय बेचकर तो पूरे देश के लिए धन मिलता है। इतने सम्पन्न देश की माँ को प्रसन्नता थी कि उसके बड़े बड़े फैले हुए घर में किसी चीज की कमी नहीं है, किसी के मांगने की उसे जरूरत नहीं है। तभी...यह क्या है।

एक तरफ पानी के विभाजन के सवाल पर झगड़ा हो रहा है और ईंट का जवाब पत्थर से दिया जाने लगा। दूसरी तरफ भाषा समस्या को लेकर झगड़ा बड़ा तो तड़ातड़ तोड़–फोड़ बसे जलाना कहीं रेलें फूकना, विद्यालयों, महाविद्यालयों में दंगा। आपसी कलह से सारा घर परेशान सब का नुकसान। बेचारी भारत माँ जिधर देखती है उधर तनाव झगड़ा वह क्या करें?

मत करो। मत करो। आपस में मत लड़ो मरो। अपना घर मत नष्ट करो। वह कहती है तो गुस्से में कोई

अंक क्रीड़ा

• देवांशु वत्स

	/	२	—		१०
×		+		×	
१०	×		—		६०
/		—		—	
	×		/	१०	४
१३		१०		२०	

खेलने के नियम

खड़ी और आडी पंक्तियों के सफेद खानों में सहीं अंक लिखते हुए रंगीन खाने तक जाएं। रंगीन खाने में लिखें अंक सफेद खानों के अंकों के हल हैं। आप सिर्फ बाएं से दाएं और ऊपर से नीचे जा सकते हैं।

(उत्तर इसी अंक में।)

सुनता नहीं तब वह किसी को डंडा मारती है किसी का कान खींचती है और जबरदस्ती रोकती है। फिर समझाती है आपस में बातचीत करके झगड़ा तय कर लो। एक दूसरे को नुकसान मत पहुँचाओ। आँखों में आँसू भरकर वह विनती करती है यह घर तुम सबका है। मेहनत करके इसको सजाओ संवारो। आपस में झगड़ा करके इसे नष्ट मत करो।

पूरब में रहने वालों पश्चिम वालों का ख्याल करो उत्तर वालों दक्षिण वालों आपस में बैर मत पनपने दो। तुम सब भाई हो। यह एक परिवार है सबको एक साथ उठना है एक साथ गिरना है। जब घर मजबूत होगा तो बाहर वाले आँख उठाकर भी नहीं देख सकते। तब तुम आराम से रह सकोगे।

फिर...धीरे धीरे सब की समझ में आ गया कि अलग अलग प्रदेशों में रहते हुए भी सब एक ही घर में एक बड़े परिवार के छोटे-छोटे हिस्से हैं और उन्होंने जान लिया कि पूरे घर की उन्नति में ही उसके छोटे छोटे हिस्सों की उन्नति हो सकती है। सब ने प्रण किया, कि वह भारत माँ के पूरे परिवार के फायदे के लिए ही काम करेंगे।

अच्छा बच्चों तुम पंजाब प्रदेश में रहने वाले हो, तुम मद्रास में, तुम उत्तर प्रदेश के और तुम बंगाल के लेकिन तुम सब भारत माँ के शानदार बड़े परिवार के एक सदस्य हो और तुम हर काम इस शानदार परिवार को शक्तिशाली और गौरवमय बनाने वाला करोगे। करोगे ना?

कहो हाँ!

● मथुरा (उ.प्र.)

कीमत

लघुकथा : मीरा जैन

ज्यों ही सुना बाबूजी के पैर में फैक्चर हो गया है सुदेश आवेश में आ गया और लगा पिताजी को खरी खोटी सुनाने- ''बबलू के हाथ से तिरंगा छूट कर गिर गया तो दूसरा खरीद लाते क्या जरूरत थी बाबूजी! आपको वहाँ कीचड़ में जाकर छोटा सा तिरंगा झंडा उठाने की मात्र दस रूपए के तिरंगे के पीछे अपनी टांग तुड़वा ली। न वहाँ जाते न स्लिप होते कंजूसी की भी हद होती है। अब देख लो अपनी कंजूसी का अंजाम लेने के देने पड़ गये।''

अस्सी वर्षीय रमाकांत जी की आँखों से आंसू छलक पड़े रुंधे गले से वे सिर्फ इतना ही कह पाये- ''बेटा! तू नहीं समझ पायेगा इस झंडे की कीमत क्योंकि तूने गुलामी के दिन नहीं देखे हैं।''

पिता का स्पष्टीकरण सुन सुदेश का गुस्सा अनायास ही ग्लानि में बदल गया और पूर्ण श्रद्धा भाव से पिता के पैरों की सार संभाल करने में जुट गया।

● उज्जैन (म.प्र.)

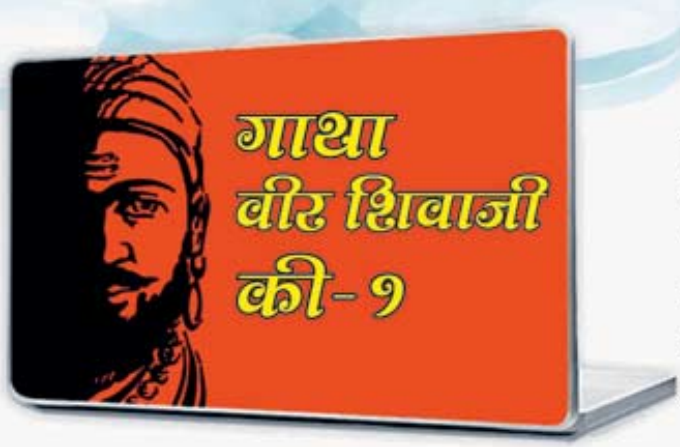

भविष्य निर्माता

घटना ७० वर्ष पूर्व की है–

मोहक चांदनी रात थी। मद्रास के (अब के चेन्नई) के दक्षिणी सागर तट पर बने एक भवन के बरामदे पर बैठा एक युवासंन्यासी, उत्ताल सागर लहरियों की ध्वनि से ताल मिलाकर महाकवि भूषण की निम्नलिखित कविता गा रहा था–

इन्द्र जिमि जम्भ पर, बाड़व सुअम्भ पर
रावण सदम्भ पर रघुकुल राज हैं।
पौन वारिवाह पर, सम्भु रतिनाह पर
ज्यौं सहस्त्रबाहु पर राम द्विजराज हैं।
दावा द्रुम दण्ड पर, चीता मृगझुण्ड पर
भूषण वितुण्ड पर जैसे मृगराज हैं।
तेज तम अंस पर, कान्ह जिमि कंस पर
त्यों मलेच्छ बंस पर सेर सिवराज हैं।।

युवा संन्यासी की मधुर कण्ठ ध्वनि में कूजित संगीत लहरी का प्रभाव इतना गहरा था कि वह मन को छूती चली गयी थी।

'यह क्या बात है कि स्वामी जी इस लुटेरे की प्रशंसा निसंकोच किये जा रहे हैं।' स्वामी जी के शिष्य ने सोचा और उस से रहा नहीं गया और बीच ही में बोल पड़ा– 'महाराज, आप यह क्या कर रहे हैं? आप जैसा साधु एक चोर, उचक्के और वंचक और हत्यारे की प्रशंसा कैसे कर रहा है। एक मुट्ठी भर दुष्टों को साथ में लेकर क्या इस व्यक्ति ने लूटपाट नहीं मचा दी थी।'

स्वामी जी का कलकण्ठ अवरुद्ध हो गया। उनका मुख रक्ताभ हो उठा और कठोर स्वर में बोले–''आपको लज्जा आनी चाहिए। किसी धर्मात्मा और पूज्य व्यक्ति के सम्मान में आप ऐसे शब्द कैसे कह सके भाई? जब हमारा धर्म और संस्कृति विनाश के कगार पर खड़ी थी, जब हमारी जाति समाप्ति पर पहुंच चुकी थी, जब हमारा अभिजात्य वर्ग अनेक प्रकार के अपमानों से पीड़ित था उस वक्त जिस विशुद्धात्मा ने जन्म लिया और हमारे रक्षक और मुक्ति दाता के रूप में जिसने कार्य किया उसके विषय में आप ऐसी अवांछनीय बात कैसे कह सके भाई? आपने विदेशियों द्वारा लिखित देश का जो इतिहास पढ़ा है यह उसी का दुष्परिणाम है। इन इतिहासकारों को न हम से सहानुभूति थी न हमारे समाज के प्रति विश्वास, न हमारे धर्म के प्रति आस्था और न हमारी संस्कृति के प्रति आदर की भावना ही थी। उनका उद्देश्य तो साम्राज्य विस्तार मात्र ही था। आप भी इतिहास के इस मिथ्या वर्णन को तोते की तरह रटे जा रहे हैं।''

वास्तव में इस महापुरुष के अवतरण के पूर्व सभी ने एक ऐसे व्यक्तित्व जन्म की कामना की थी। हमारे साधुसन्त इसी उदात्त पुरुष के आने की प्रतीक्षा में थे ताकि वह हमें विदेशी शासन के पंजों से मुक्त करे। वह व्यक्ति ऐसे ही संकट काल में पृथ्वी पर आया था और उसने अधर्म का नाश और धर्म की स्थापना की थी। वह पुरुष भगवान शंकर का अवतार था। इस व्यक्ति में पुराणों में वर्णित महापुरुषों के सभी गुण विद्यमान थे। क्या उससे

महान आत्मा, उससे बड़ा शासक, उससे श्रेष्ठ पुरुष, उससे बड़ा भक्त कोई और भी हुआ है? इस व्यक्ति में हमारे राष्ट्र का स्वरूप विद्यमान था। वह भारत के भविष्य का मार्गदर्शक था।''

स्वामी जी की ओजस्वी वाक्धारा चलती रही।

शिष्य स्तम्भित रह गया। उसे लगा कि वह बहुत ही अकिंचन और मूर्ख है, अज्ञानी है।

''स्वामी जी इस महापुरुष के विषय में हमें सब कुछ बताइए न।'' शिष्य ने लज्जित होकर कहा।

स्वामी जी ने तब इस महापुरुष की जीवन, उसकी उपलब्धियां उसकी विजयावली सुनानी प्रारम्भ कर दी।

स्वामी जी की वाणी से अभिभूत श्रोता इतिहास में २५० वर्ष पूर्व जा पहुंचे। सर्वत्र शान्ति व्याप्त हो गयी।

वह युवा संन्यासी और कोई नहीं स्वामी विवेकानन्द जी थे जो आधुनिक भारत के हेतु प्रकाश वाहक के रूप में जन्में थे और शिष्य थे डॉ. एम. सी. नंजुन्दाराव जिन्होंने भावी पीढ़ी के हितार्थ अपना उस दिन का अनुभव 'वेदान्त केसरी' में लिपिबद्ध कर दिया था।

स्थल था श्री भट्टाचार्य महाशय का निवास स्थान।

(अगले अंक में निरंतर...)

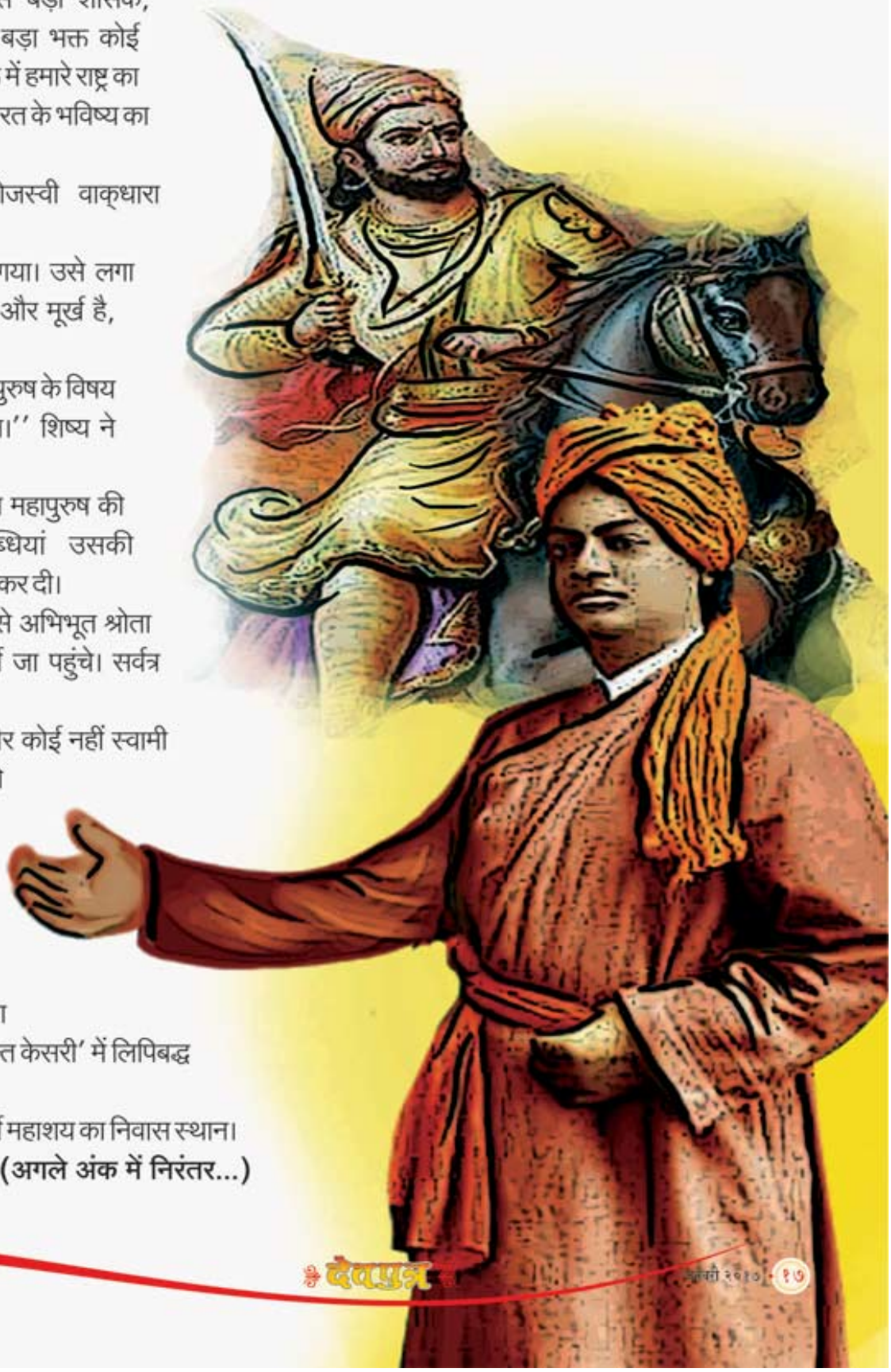

वीर सिपाही

कहानी : सुधा भार्गव

सूरज से दमकते चन्दन बाबू के घर में उमड़ते घुमड़ते काले बादलों का साया छा जाना चाहता था। एक पल खामोश न रहने वाली उनकी लाड़ली आज खामोशी के जंगल में बड़ी उदास दिखाई दे रही थी। उसके लिए जो चुप रहना उतना ही कठिन था जैसे आकाश में छलांग लगाना। माँ–बाप करें क्या न करें...वे तो उसे कल की वही शैतान चंचल पारो देखना चाहते थे।

विद्यालय से आते ही न उसने खाया न पूरे विद्यालय की चकल्लस सुन माँ ने कानों में उँगलियाँ ठूँसी। बस बिस्तर पर लोटन कबूतर हो गई।

घर में घुसते ही पर्वत ने अपनी बहन को असमय लेटे देखा तो उछल पड़ा– ''ए पारो! कोपभवन में कैसे लेटी है? एकदम फुल्ले फुल्ले गाल–बिलकुल कैकई लग रही है। माँ से कितनी बार कहा– तुझे दूरदर्शन की हिन्दी धारावाहिक न देखने दे। बिगड़ जाएगी...बिगड़ जाएगी। बिगड़ गई न तू।''

''देखो भैया! मुझे छेड़ो मत– वरना बहुत बुरा होगा।''

''बुरा तो हो ही रहा है। तेरी चुप्पी ने सबके सिर में दर्द कर दिया है। इससे बुरा अब क्या होगा। मेरी अच्छी बहना! अपने भाई को तो बता दे –तेरे दिमाग में क्या चल रहा है?''

''भैया! विद्यालय की दीदी कह रही थीं– भारतीय सेना में भर्ती हो रही है लड़कों के साथ लड़कियों की भी। मैं भी तुम्हारी तरह एन.सी.सी. की ट्रेनिंग लेना चाहती हूँ। सेना में भर्ती होकर देश का वीर सिपाही बनूँगी। पर पता नहीं माँ पिताजी इसके लिए राजी होंगे या नहीं।''

''तू पागल हो गई है क्या? अगर नहीं हुई है तो एन.सी.सी. ट्रेनिंग के समय रात दिन मेहनत करके पागल हो जाएगी। शिविर में तो सुबह ही जगा देते हैं। भोर की किरणों के साथ दौड़ व्यायाम और ऊंचाई पर चढ़ने का अभ्यास शुरु हो जाता है। अच्छे–अच्छे मुर्गे बन जाते हैं और कूकड़ू करते घर भाग जाते हैं। फिर तू किस खेत की मूली है?''

''भैया देखो...तुम मुझे फिर चिढ़ा रहे हो। न जाने तुम मुझे अपने से कम क्यों समझते हो? मैं तुम्हारी तरह यह सब कर सकती हूँ और हाँ, समय आने पर मैं देश की सीमा पर शत्रुओं से भी लड़ने जाऊँगी।''

''हिन्द पाक की सीमा पर जब देखो दुश्मनों की फौज से मुठभेड़ होती रहती हैं। न बाबा। मैं अपनी इकलौती बहन को सेना में भर्ती नहीं होने दूंगा। माँ तो जल्दी से लड़का खोजकर तेरी शादी करने की सोच रही है। फिर तू जाने और...हमारे जीजा जी जाने।''

''ओह भैया! तुम कभी मेरी मदद नहीं कर सकते सिवाय खिल्ली उड़ाने के। जाओ तुमसे नहीं बोलती।''

भाई की बातों से पारो का मन बुझ सा गया। इतने में पिताजी आ गए। वे काफी देर से भाई बहन की तकरार सुन रहे थे। पिताजी को देखकर पारो बड़ी उम्मीद के साथ बोली– ''पिताजी! क्या आप भी चाहते है कि मैं घर साफ करने, खाना बनाने, फटे कपड़े सीने में ही जिंदगी गुजार दूँ। दुनिया कितनी आगे बढ़ रही है। घर के साथ साथ मैं बाहरी दुनिया में भी तो कदम रख सकती हूँ। मुझे आप सब घर की चारदीवारी में ही बंद क्यों रखना चाहते हैं....बोलिए न पिताजी?''

''बेटी! तुम गलत समझ रही हो। हम तो तुम्हें इतना आराम और प्यार देना चाहते हैं कि हमेशा गुलाब की तरह खिली रहो।

''पिताजी! ऐसा प्यार, आराम किस काम का जो मुझे अपाहिज बना दे। अपने काम के लिए हमेशा दूसरों का मुँह ताकूँ। मुसीबत आने पर मैं बेचारी नहीं बनना चाहती, नहीं चाहिए किसी की दया।''

''बिटिया! तुम्हें दूसरों की जरूरत पड़ेगी। क्या अपनी रक्षा खुद कर पाओगी?''

''मैं बंदूक, चलाना सीखूंगी– जूड़ो कराटे सीखूंगी। केवल अपनी ही नहीं देश की रक्षा भी करूँगी।''

''पारो की माँ! सुन रही हो अपनी बेटी की बातें। लगता है हमारे घर में झांसी की रानी ने दुबारा जन्म ले लिया है।'' चन्दन बाबू अपनी बेटी के साहस और देशभक्ति की भावना को देख बहुत खुश थे।

''आप भी किसकी बातों में आ गए। भला यह सीख पाएगी।''

''सीखने के लिए लगन होनी चाहिए। यह लगन हमारी बेटी में है। वसंत कुंज में रहने वाली भारत की पहली महिला आकाश गोताखोर (स्काई ड्राइवर) रीचल थॉमस ने तो नानी–दादी बनने के बाद नार्थ पोल से छलांग लगा दी। लगन के कारण न जाने कब से इसका अभ्यास कर रही होंगी। देखना...हमारी बेटी भी एक दिन देश का नाम ऊंचा करेगी। और हाँ पारो! जब तुम्हें एन.सी.सी की ट्रेनिंग लेनी ही है तो देरी किस बात की। कल ही विद्यालय से आवेदन पत्र ले आओ।'' चन्दन बाबू उसकी ओर देख मुस्कुरा उठे।

''ओह मेरे अच्छे पिताजी! कहकर वह उनके गले लग गई।

पारो के चहरे से उदासी का घना कोहरा छंट चुका था। वह कमर कसकर वीर सिपाही बनने का अपना सपना सच करने में लग गई।

• बैंगलुरू (कर्नाटक)

पुण्यतिथि : ११ जनवरी

लाल बहादुर शास्त्री के निधन पर

कविता : डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ

नोएडा (उ.प्र.)

प्राणों का फूल गिरा भू पर
जीवन लतिका से छूट गया।
सबसे उज्ज्वल था आभा में
नक्षत्र गगन का टूट गया।
होता अब भी विश्वास नहीं
तुम नहीं रहे तुम रहे नहीं।
पिंजरा भी सूना पड़ा हुआ
पर तुम प्यारे शुक वहाँ नहीं।
यह देश स्वर्ग था भूतल पर
मिट्टी थी माथे का चंदन।
थी मातृभूमि प्यारी तुमको
इसका नित करते थे वंदन।
अगणित वीरों ने बलि दे दी
जब युद्ध क्रुद्ध ललकार उठा।
वीरता भरी गाथा सुनकर
वीरों का रक्त पुकार उठा।
वीणा के टूटे तार तभी
झंकार गगन में गूंज उठा।
हे क्रांति दूत! तुम कहाँ गए
अज्ञात देश में चले गए।
भारत माँ के सच्चे सपूत
तुम सच्चे सैनिक कहाँ गए?
है मेरा प्यारा लाल कहाँ
कोई तो मुझको बतला दो।
वह कहाँ गया कब लौटेगा
यह बात अभी तुम बतला दो।
कोसीगिन की आँखों ने तो
आँसू की झड़ी लगाई थी।
लेकिन अयूब की आँखें भी
पीड़ा से नम हो आई थीं।
अपने युग के तुम महापुरुष
जग की वाणी यह बोल उठी।
इतिहास बनाया है तुमने
इतिहास बनाया बोल उठी।
तुम चले गए हम खड़े खड़े।
आँसू की धार बहाते हैं।
हे वीर अमर गाथा तेरी
हम मन ही मन दुहराते हैं।
यह यात्रा अन्तिम यात्रा थी
ऐसा होता विश्वास नहीं।
बन ज्योति विलीन हुए तुम हाँ
ऐसा होता विश्वास नहीं।

भारत देश

कविता : डॉ. चक्रधर नलिन

सकल बिश्व में सबसे सुन्दर
भारत देश हमारा है।
नभ-मंडल में चमक रहा है
ज्यों कोई ध्रुवतारा है।

इसका ऊँचा भाल हिमालय
हर पल रक्षा करता है,
पूरब अरुण निकलकर प्रातः
नव सुंदरता भरता है,
इसके चरण पखार रहा है-
गहरा नीला सा सागर,
मलय पवन आनंद लुटाता
सभी दिशाओं से आकर,
मन को देता है प्रसन्नता
दृश्य यहाँ पर प्यारा है।
सकल बिश्व में सबसे सुंदर
भारत देश हमारा है।

इसकी शोभा बड़ी निराली
यहाँ दिव्य सुत बीर, महान,
महानदी, गंगा, कावेरी
यमुना, सरयू, नित गतिमान।
माटी बहुत उर्वरा इसकी
हरा, भरा अनुपम आँचल,
बादल जल बरसाते पल में
पहने बिजली की पायल,
हम सब देशबासियों में ज्यों,
बहती मधुरस धारा है।
सकल बिश्व में सबसे सुंदर
भारत देश हमारा है।

इसके पर्वत, निर्झर, नदियाँ
जैसे यश नित गाती हैं,
चिड़ियाँ, भौंरे और तितलियाँ
भी अतिशय सुख पाती हैं,
मिलजुल सभी प्रेम से रहते
भेदभाव का नाम नहीं हैं,
सभी सुखी, सम्पन्न यहाँ जन
रोग, शोक का काम नहीं है,
सर्वोन्नत बिज्ञान जगत में
यह धरती पर न्यारा है।
सकल बिश्व में सबसे सुंदर
भारत देश हमारा है।

● लखनऊ (उ.प्र.)

दिमागी कसरत

बीच के गोले में ऐसा कौन-सा अक्षर भरा जाए ताकि बाकी के छः खानों में दिये गये अक्षरों से मिलकर हर बार एक नया शब्द बन जाए।

अक्षरों और अंकों में संबंध बताइए।

कौन-सी दो आकृतियाँ एक समान हैं?

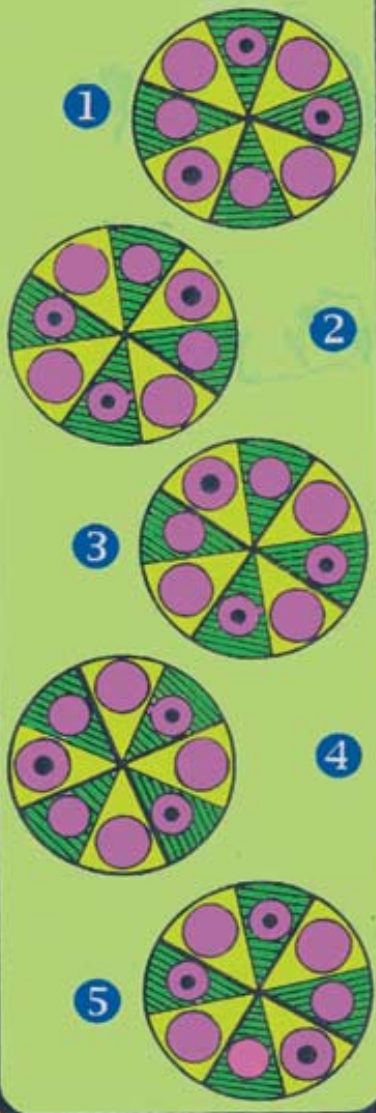

आइवर यूशिएल

(उत्तर इसी अंक में)

।। बाल प्रस्तुति ।।

जंगल में क्रिकेट

कविता : आशीष त्यागी

हक्का बक्का, भालू कक्का।
चूहे जी ने, मारा छक्का।।
ढेंचू ढेंचू, रेंकू रेंकू।
कपिल देव सी, गेंदे फेंकू।।
आना बाना, कौआ काना,
कैंच मिला तो, गाता गाना।
झम्मर झम्मर, पहला नम्बर।
हाथी दादा, फेंके बंपर।।
हल्ला हल्ला, होता हल्ला।
शेर खान से, छूटा बल्ला।।
मिनमिन पिनपिन, झींगुर झिनझिन।।
गेंद हुई क्यों इतनी स्पिन?

• असवार (म.प्र.)

बच्चों की खुशियाँ

चित्रकथा - देवांशु वत्स

नताशा, आओ इस मकान में छुप जाएँ...
ओह!
अरे, नताशा कहाँ रह गई?
छत पर से देखता हूँ...
लड़की उससे कहो कि पैसे मेरे हवाले कर दो!
क्या करुँ? अरे हाँ, तरकीब!!
और फिर...
हाय, मर गया!
टनाक
गोलगप्पे खाये अब तारे देखो!
हाय!
और फिर...
समाप्त

राष्ट्रध्वज

कविता : श्यामा गुप्ता 'दर्शना'

तीन रंग से सजा तिरंगा,
राष्ट्रध्वजा है कहलाता।
रंग केशरिया, श्वेत, हरा
इन रंगों से सजी ध्वजा।
त्याग और बलिदान की गाथा,
केशरिया रंग समझाता।
रहें देश में शान्ति सदा ही,
श्वेत रंग की परिभाषा।
सदा रहे खुशहाली इसका,
हरा रंग प्रतीक बना।
चक्र अशोक है बना बीच में,
गतिशीलता दर्शाता।
सभी रंग ये हमसे कहते,
उल्लास हर्ष की हो वर्षा।
तीन रंग से सजा तिरंगा,
राष्ट्रध्वजा हैं कहलाता।

● भोपाल (म.प्र.)

आपकी पाती

देवपुत्र अक्टोबर अंक मिला। यह बड़ी प्रसन्नता का प्रसंग है कि बारह मास प्रत्येक अंक सृष्टि सामयिक दृष्टि से भी गुलमोहर सी मनोहर धरोहर के समान रहती है। मनोरंजन और ज्ञानवर्द्धक का संगम अपने आप हृदयंगम होता है। चित्र सज्जा से रचनात्मक सामग्री के साथ पुष्प वर्षण जैसा आकर्षण रहता है। बच्चों से लेकर बड़ों तक के लिए यह पत्रिका फुलवारी सी प्यारी है।

अक्टूबर अंक में डा. बानो सरताज का आलेख दीपक न्यारे जितना प्रशंसनीय है उतना संग्रहणीय भी।

● राजा चौरसिया, कटनी (म.प्र.)

वो बस्ता

प्रस्तुति : विजय भट्ट

एक लाइन वाली, चार लाइन वाली और डब्बे वाली, तीन तरह की कॉपियाँ होती थी तब बैग में न...न...बस्ते में और वह तीन किताबें जिनमें से एक दो तो घर भूल जाना जरुरी होता था। क्योंकि शिक्षिका बोल देती थी– ''चलो तुम दोनों एक में से पढ़ लो।''

उन्हीं कापियों में से सबसे बीच का पेज मोड़ के ग्रामर और व्याकरण की कॉपी बनवा लेती थी शिक्षिका और गणित तो बाप रे एक ही सौ मन भारी थी (हमारे मन पे)

एक छोटा सा 'जॉमैट्री बॉक्स' जो दोनो तरफ चोंच निकाले पेंसिल और उसके छिलकों से भरा होता था वो क्या हे न की पेंसिल की छिलकों को पूरी रात दूध में भिगोने से 'रबर' बन जाता था (हमारे बचपन की सबसे बड़ी अफवाह)।

टिफिन तो हमारे बस्ते में होता नहीं था वो क्या है न माँ तपती धूप में तपता हुआ उसेन अपने पल्लू से पकड़ के जो लाती थी 'आधी छुट्टी' में... वो तरी की सब्जी का रिसता स्टील का टिफिन खुलने से पहले ही माँ की रसोई की पूरी कहानी कह जाता था...

कुछ रईस भी होते थे नमकीन बिस्कुट और कभी दो ब्रेड के प्लास्टिक के टिफिन वाले...पता नहीं माँ हमें काहे नहीं भेजती थी ये सब।

पानी की बोतल????अरे 'पानी की टंकी' थी न जिसके बहाने 'दीदी पानी पी आयें' कह कर सुकून के दो पल बिता आते थे जो भी है बहुत ही प्यारा होता था हमारा 'बस्ता...' स्पाइडर मैन, छोटा भीम और बार्बी के कार्टून तो नहीं छपे होते थे उन पर लेकिन हां वो दबा के खोलने वाले बटन एक बहुत अहम हिस्सा थे उसका...

टिक–टॉक, टिक–टॉक करता है आज भी वो बस्ता हमारे दिल में बसता है।

● इन्दौर (म.प्र.)

हार नहीं मानूंगा

कहानी : डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता'

कक्षा पाँचवी का छात्र सचिन बहुत ही होनहार था। जितना वह पढ़ाई में तेज था उतना ही खेलकूद में भी। विद्यालय में होने वाली सांस्कृतिक गतिविधियों में भी वह बढ़–चढ़कर हिस्सा लेता। सचिन सरस्वती विद्या मंदिर में पढ़ता था। सभी आचार्य जी एवं दीदी उसे बेहद प्यार करते थे।

सचिन के पड़ोसी मित्र अंग्रेजी माध्यम विद्यालय में पढ़ते थे किन्तु सचिन हिन्दी माध्यम का छात्र होने पर भी अंग्रेजी विषय में उसकी अच्छी पकड़ थी। उसकी माँ कहती– ''अंग्रेजी सीखने के लिए अंग्रेजी माध्यम विद्यालय में पढ़ना अनिवार्य नहीं है। विषय की पकड़ तो अभ्यास से होती है। पढ़ाई तो अपनी मातृभाषा में ही करनी चाहिए।

सचिन ने कहा– ''किन्तु ये सभी मित्र तो मेरे हिन्दी और संस्कृति पर हँसते हैं।

माँ ने कहा– ''ऐसा वे इसलिए करते हैं क्योंकि उन्हें यह सब आता ही नहीं'' जो अपनी मातृभाषा से प्रेम नहीं करते वे जीवन में तरक्की नहीं कर सकते। उनका जीवन हमेशा अधूरा रहता है। सचिन माँ की बात से प्रभावित होकर मुस्कुराता और लगन के साथ

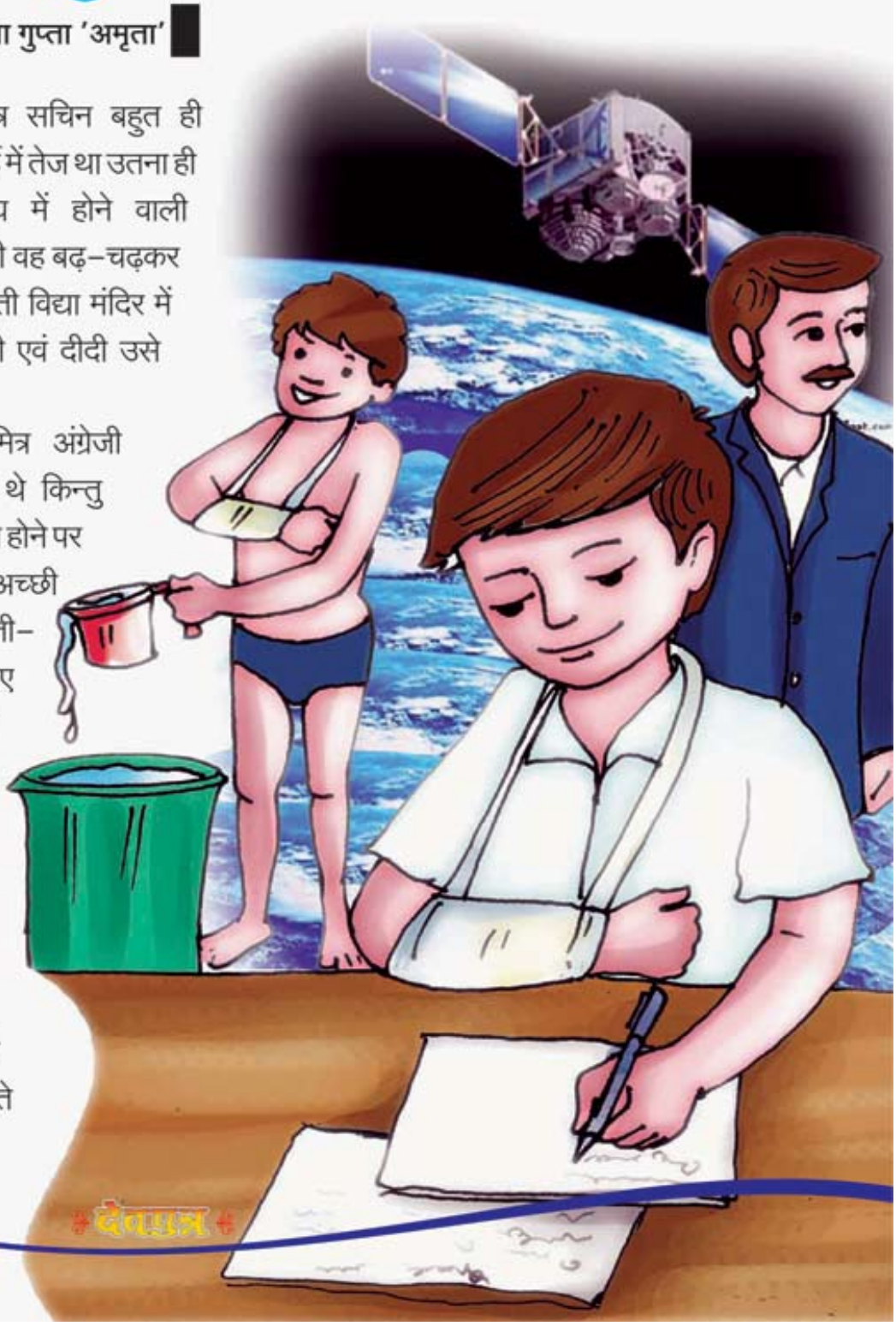

अपनी पढ़ाई अपने कार्यों में जुट जाता।

अर्द्धवार्षिक परीक्षा समाप्त हो चुकी थी। सचिन को हमेशा की तरह सर्वाधिक अंक प्राप्त हुए थे। सचिन के मृदु व्यवहार के कारण उसके बहुत से मित्र बन गए थे। समय आने पर वह अपने मित्रों की हमेशा मदद करता।

एक दिन क्रिकेट खेलते समय सचिन फिसलकर गिर गया और उसके दाहिने हाथ की हड्डी टूट गई। डाक्टर ने एक माह के लिए प्लास्टर बाँध दिया। अब तो सचिन के माता–पिता एवं शिक्षक भी बेहर चिंतित और दुखी हो गए क्योंकि वार्षिक परीक्षा नजदीक थी। विद्यालय में लिखाई वह कैसे करेगा? वह पढ़ाई में पिछड़ जाएगा। इस बात पर सचिन भी कुछ परेशान हुआ किन्तु उसने मन में ठान लिया था कि ''मैं हार नहीं मानूंगा''। वह विद्यालय में एक भी दिन अनुपस्थित न रहा। सचिन जिद्द करके प्रतिदिन विद्यालय जाता। शिक्षक जब श्यामपट्ट पर लिखवाते तो वे सचिन के मित्रों से कहते कि अपना लिखने के बाद सचिन की पुस्तक में भी लिख देना ताकि वह पढ़ सके। किन्तु सचिन ने स्वयं बाएं हाथ से लिखने का अभ्यास शुरु कर दिया। धीरे–धीरे दो लाइन चार लाइन लिखते–लिखते जब तक प्लास्टर खुलता तब तक वह तेजी से बाएं हाथ से लिखने लगा। वह एक भी दिन लिखने में पीछे न रहा। सभी शिक्षक और सचिन के मित्र उसकी लगन व प्रतिभा को देखकर हतप्रभ हो गए। वे सचिन से पूछते– ''तुमने यह कैसे सीख लिया? वह बोला मेरी माँ कहती है–

''हारिये ना हिम्मत बिसारिये ना राम
जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये''

यह सब माँ की सीख का परिणाम है। फिर मन में यदि संकल्प ले लिया जाए तो कोई भी काम कठिन नहीं है। जब एक माह बाद प्लास्टर खुला तो हड्डी ठीक तरह से न जुड़ी होने के कारण डाक्टर ने फिर से एक माह का प्लास्टर बाँध दिया। पर अब तो सचिन ने लिखने–पढ़ने के अतिरिक्त अपने सारे काम उलटे (बाएं) हाथ में करना सीख लिखा था। नहाना, कपड़े धोना, भोजन करना सब कुछ वह स्वयं करता। यथा संभव किसी का सहारा ना लेता। छोटी सी उम्र में आत्मनिर्भरता का यह पाठ जीवन भर उसके काम आया। सचिन की माँ उसे प्रतिदिन सोते समय रात्रि में अच्छी–अच्छी प्रेरक कहानियां सुनाती। सुनते–सुनते वह निद्रा की गोद में चला जाता। प्रातःकाल उठकर वह माता–पिता के चरण स्पर्श करता। फिर अपनी दिनचर्या शुरु करता। माँ का आशीर्वाद (पैर छूकर) लेकर ही वह विद्यालय जाता।

वार्षिक परीक्षा हुई और परिणाम वही शत–प्रतिशत। प्रधानाचार्य जी ने सचिन को हृदय से लगाकर ढेर सारा आशीर्वाद दिया। पांचवी कक्षा पास करने के उपरांत नवोदय विद्यालय चयन परीक्षा में शहर से केवल एक छात्र सचिन का ही चयन हुआ। लगातार मेहनत करके प्रथम आने वाला, हिम्मत ना हारने वाला यह छात्र अभियांत्रिक बनकर भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान केन्द्र 'इसरो' में वैज्ञानिक के पद पर आसीन हो गया। छात्र सचिन ने घर, समाज, नगर और देश का गौरव बढ़ाया। इसीलिए कहा जाता है–

''थककर न बैठो राह कभी
हर सांझ के बाद सवेरा है
मन में हो विश्वास अगर
समझो मंजिल पर डेरा है''

● **कटनी (म.प्र.)**

।। सुभाष जयंती : २३ जनवरी ।।

जैसा पिता वैसा पुत्र

कहानी : सांवलाराम नामा

सुभाषचन्द्र बोस बचपन से ही अत्यंत ही मेधावी और होनहार बालक थे। उनके वकील पिता की हार्दिक इच्छा थी कि वे एक आईसीएस अधिकारी बनें। पिता की इच्छा को पूर्ण करने के लिए सुभाष इंग्लैण्ड गए और वहाँ से आईसीएस की परीक्षा उत्तीर्ण की।

लेकिन उनका मन मस्तिष्क और दिल अंग्रेजों की गुलामी का प्रबल विपरीत और विरोधी था। उनके भीतर तो राष्ट्रसेवा की दिव्य, भव्य, प्रबल, प्रचण्ड भावना हिलौरे ले रही थीं। एक ओर आईसीएस का उच्च गरिमा गौरवपूर्ण पद तथा दूसरी ओर सेवा का कठिन त्यागमय पथ। उनके मन में अंतर्द्वंद चल रहा था। तथापि देश सेवा की मुराद को त्यागने का तिल भर विचार नहीं किया उल्टी भावना प्रबल से प्रचण्ड होती गई तो...

अंततः सेवा का विशुद्ध भाव जीत गया और उन्होंने निर्णय लिया कि आईसीएस की नौकरी (अंग्रेजों की गुलामी में) नहीं करेंगे। उन्होंने अपना त्यागपत्र लिख कर अंग्रेज सरकार को सौंप दिया। उनके पिता के मित्र सर विलियम ड्यूक ने उनका इस्तीफा अपने पास रखकर उनके पिता को यह सूचना भेजी।

पिता ने उत्तर भेजा– ''मैं अपने पुत्र के इस कार्य को गौरव की दृष्टि से देखता हूँ। मैंने उसकी इस शर्त को मंजूर करके ही उसे विलायत भेजा था। विलियम ड्यूक इस उत्तर से हैरान हो गए। अब उन्होंने सुभाष को बुलाकर पूछा– ''नौजवान! तुम अपने भोजन का क्या प्रबंध करोगे?''

सुभाष ने उत्तर दिया– ''मैंने बचपन से दो आने रोज में गुजारा करने की आदत डाली है और दो आने में पैदा कर लूंगा। इसमें शक नहीं है?'' सर विलियम अवाक् होकर सुभाष के चेहरे पर राष्ट्रभक्ति के भावों से चमचमाता चेहरा देखने लगे।

सुभाषचंद्र को उनके पिता ने पत्र लिखा– ''तुमने देश सेवा का संकल्प ले लिया है, ईश्वर तुम्हें सफलता प्रदान करें।'' सुभाष ने प्रत्युत्तर में लिखा– ''पिताजी! आज मुझे आप पर जितना गर्व हो रहा है, इससे पहले कभी नहीं हुआ।''

राष्ट्रभक्ति का जोश रखने वले हर अनुकूल प्रतिकूल परिस्थितियों में इसे हर संभव निभाते हैं और परिवार का सहयोग व समर्थन आशीर्वाद इस जोश उत्साह, आशा, उल्लास को दोगुना कर देता है।

● भीनमाल (राज.)

पहुँचाओ तो जानें

• राजेश गुजर

गणतंत्र दिवस पर लाल किले पर परेड़ में शामिल होने के लिए
इस वीर जवान को वहां तक पहुंचाओ।

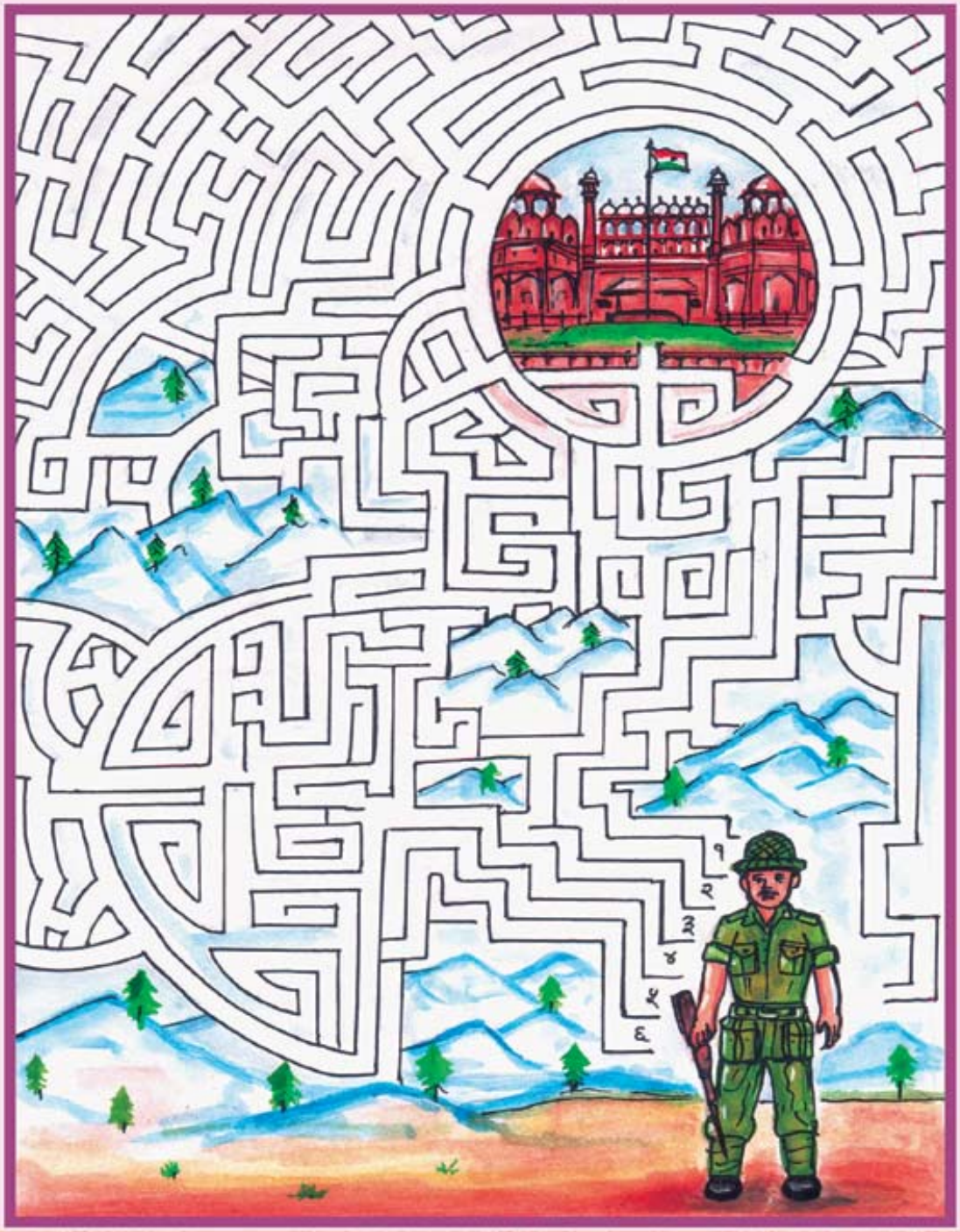

।। मूल गुजराती से अनूदित ।।

भलाई की जीत

कहानी : शिवचरण मंत्री

जबरा तो जबरा ही था। बोलने में जबरा, ताकत में जबरा, पैसे भी जबरा और झगड़ने में जबरा और बड़ा ही घमंडी था। गाँव में उसकी छांव अच्छी नहीं थी। सब उससे दूर ही रहते थे। गाँव के किसी भी लड़के से उसकी स्थाई दोस्ती नहीं थी।

गाँव में एक नया कुम्हार आया था। वह मिट्टी के बर्तन बनाता था। उसके भलिया नाम का एक लड़का था। वह नौवीं कक्षा में पढ़ता था। सहपाठियों ने उसे सलाह दी– भलिया, यह जबरा अच्छा लड़का नहीं है, इससे दूर ही रहा करो, यह दोस्ती करने लायक नहीं है। यह बड़ा ही झगडालू और घमंडी है।

भलिया ने कहा– ''ठीक है, मैं इसे देख लूंगा। यदि इसे मुझसे झगड़ा किया तो इसे ऐसा सबक पढ़ाऊंगा कि यह आजीवन याद करेगा, तुम देखना।''

''ठीक भाई। जैसी तेरी इच्छा, पर सावधान रहना। जबरा कोई अच्छा व्यक्ति नहीं है यह याद रखना।'' सभी साथियों ने उसे सावधान किया।

गांव में माध्यमिक विद्यालय नहीं था अतः गांव के सभी विद्यार्थी समीपस्थ सोम गांव में पढ़ने जाते थे। सबके पास साइकिलें थी पर जबरा के पास लूना गाड़ी थी।

एक दिन जबरा ने भलिया को रास्ते में रोककर कहा– ''क्यों भलिया तू बहुत बड़ा हो गया है? अपने मित्रों के बीच किस बात की डींग मारता है? तू मेरा नाम मत लेना समझा? यदि भविष्य में कभी भी मुझे याद किया तो मुझसे बुरा कोई नहीं होगा, ध्यान रखना। मैं आज तो तुझे छोड़ देता हूँ, पर आज के बाद कभी मेरा नाम मत लेना।

भलिया, चुपचाप सब सुनता रहा। आखिर में उसने कहा– अरे जबरा भाई मेरे मन में आपके प्रति कोर्ठ दुर्भावना नहीं हैं। मैं तो सदैव आपके भले की ही सोचता हूँ। यदि मुझ से कोई भूल हो गई हो तो क्षमा करें, बस। इतना होने पर भी जबरा के मन में भलिया खटकने लगा। अतः उसने भलिया को जैसे भी संभव हो तंग, परेशान करने का मन ही मन निश्चय कर लिया। जबरा ने भलिया को परेशान करने की योजनाएं बनाई।

एक दिन छुट्टी होने के बाद भालिया विद्यालय के

साइकिल स्टैण्ड पर अपनी साइकिल लेने पहुँचा तो देखा कि साईकिल में पंचर है। साथियों ने कहा– ''भलिया, तेरी साईकिल तो एकदम नई है, फिर पंचर?''

एक साथी ने कहा– ''मुझे लगता है यह काम जबरा का है। भलिया को उसे पाठ पढाने को कहा था अतः उसने बदला लिया है, वह भलिया को हानि पहुँचाना चाहता है।''

दूसरे मित्रों ने बात की पुष्टि करते हुए कहा–''हाँ, यह बात सच है। चिढ़ा नाग दंश मारेगा ही मारेगा। अतः अब भलिया जबरा का नाम लेना ही छोड़ दे तो ठीक रहे।''

पर भलिया की बात अलग ही थी। उसने कहा– ''यह बात सच है कि किसी ने उसकी साइकिल में पंचर किया है, पर यह कैसे कहा जा सकता है कि यह काम जबरे का ही किया है? हम में से किसी ने उसे पंचर करते नहीं देखा। अतः उस पर यह आरोप कैसे लगाया जाए?'' मैंने अपनी आँखों से उसे पंचर करते नहीं देखा अतः उसे गुनाहगार क्यों माना जाए?

''भाई तेरी जैसी इच्छा। हमने तो इसलिए कहा कि तू नया आया है पर हम वर्षों से जबरा को जानते हैं।'' सब ने कहा।

कुछ दिन बीते कि भलिया के बेग में से गुजराती किताब खो गई। भलिया ने सभी को पूछा पर किसी ने भी पुस्तक नहीं ली। मित्रों ने कहा– ''यह काम जबरा का ही है, हम उसे बहुत अच्छी तरह जानते है। अब भलिया भाई जैसा चाहे वैसा मान।''

भलिया तो अपने नाम के प्रभावानुसार भला ही था उसने कहा– ''मित्रो, आपकी बात संभवतः सच हो पर मैं जबरे पर आक्षेप नहीं लगा सकता। शायद किसी ओर ने उठाई हो। जो पुस्तक ले गया उसे पुस्तक की जरूरत होगी तब ही तो ले गया होगा? ले जाने वाला पुस्तक पढ़ कर यदि उतीर्ण होता है तो मुझे खुशी होगी। मैं नई पुस्तक खरीद लूंगा। वह खुश रहे और हे पुस्तक ले जाने वाले भाई ! मैं पुस्तक से जाने को चोरी नहीं मानता हूं। यदि तूने मुझसे पुस्तक मांगी होती तो मैं तुझे पुस्तक खुशी खुशी दे देता। मैं पुस्तक लेने की बात को चोरी नहीं मानता हूँ। हाँ, आनन्द से रहना भाई।''

भलिया की हर बातें जबरा तक पहुंच जाती थी। ये बातें भी पहुंच गई। जबरा सुनकर आश्चर्यचकित रह गया और सोचने लगा कि क्या भलिया वास्तव में ऐसा है?

वार्षिक परीक्षा होने में एक महीना बाकी था, इसी समय एक घटना घटित हुई।

विद्यालय की छुट्टी हो गई थी। जबरा अपनी लूना गाड़ी लेकर आगे निकल गया था। उसके पीछे-पीछे कई विद्यार्थी अपनी साइकिलों पर अपने अपने घर जा रहे थे। रास्ते में एक टेम्पो वाला जबरा की लूना गाड़ी को टक्कर मारकर भाग गया था। जबरा रास्ते में पड़ा कराह रहा था। रास्ते में एक ओर जबरा और उसकी लूना पड़ी थी। उसके पाँव में मोच आ गई थी। इससे वह खड़ा होने में असमर्थ था। रास्ते में निकल रहे विद्यार्थी उसे देखते हुए भी उसकी मदद को नहीं आ रहे थे। भलिया ने उसे पड़ा देखा और तुरंत अपनी साइकिल खड़ी की। मित्रों ने इशारा किया इसे ऐसे ही पड़ा रहने दो चलो।

''भलिया ने कहा तुम जाओ मैं आता हूँ। जबरा को पाठ पढ़ा कर आता हूं। तुम देखना कल जबरा पूरा बदल जावेगा। कदाचित वह जबरा नहीं रहे।''

भलिया जबरा के पास जा कर बैठ गया, जबरा भाई अस्पताल चलिए। मैं अपनी साइकिल पर ले चलता हूं। तू जा मेरा जो होना है वह होगा। मुझे तेरी मदद की जरूरत नहीं है।''

''अरे, जबरा भाई आप यह क्या कह रहे हैं? मैं आपको इस तरह घायल अवस्था में छोड़ कर जाऊँ। वह संभव नहीं। मैं आपको पहले अस्पताल ले जाकर ही घर जाऊंगा।'' इतना कहकर भलिया ने जबरा को अपनी साइकिल पर बैठा लिया।

दूसरे दिन भलिया अपने मित्रों के साथ जबरा के घर गया। जबरा हँसते-हँसते कह रहा था मित्रो, भलिया जीत गया और मैं हार गया। आज से जबरा पूरा बदल गया, जबरा का घमंड मर गया है। मित्रो, मैं आज से आपका मित्र हूँ।

''और यह भलिया किसका मित्र है? मित्रों ने पूछा।

''भलिया, यह तो सारे गाँव का मित्र है।'' जबरा ने भले को अपनी बाहों में भर कर कहा।

● अजमेर (राज.)

मूल गुजराती कथा :

संकलचन्द पटेल (गुज.)

सही उत्तर

अंकक्रीड़ा

२६	/	२	–	३	१०
×		+		×	
१०	×	१०	–	१०	६०
/		–		–	
२०	×	२	/	१०	४
१३		१०		२०	

सही उत्तर

दिमागी कसरत

(१) र

(२) २ व ४

(३) १. चार्ल्स डिंकस
२. एडीसन
३. गोपालकृष्ण गोखले
४. मेरी क्यूरी
५. रामकृष्ण परमहंस

भूल-भुलैया

चांद मो. घोसी

गाय अपने प्रिय खाद्यों तक पहुंचना चाहत है परन्तु भूल-भुलैया में उलझ कर रह गई है। क्या आप वहां तक पहुंचने में उसकी सहायता कर सकते हैं?

बिंदु मिलाएं

यदि आप जानना चाहते हैं कि इस चित्र में कौन-सा जीव छिपा है तो बिंदु क्रमांक १ से २९ तक मिलाएं। वह स्वतः ही सामने आ जाएगा।

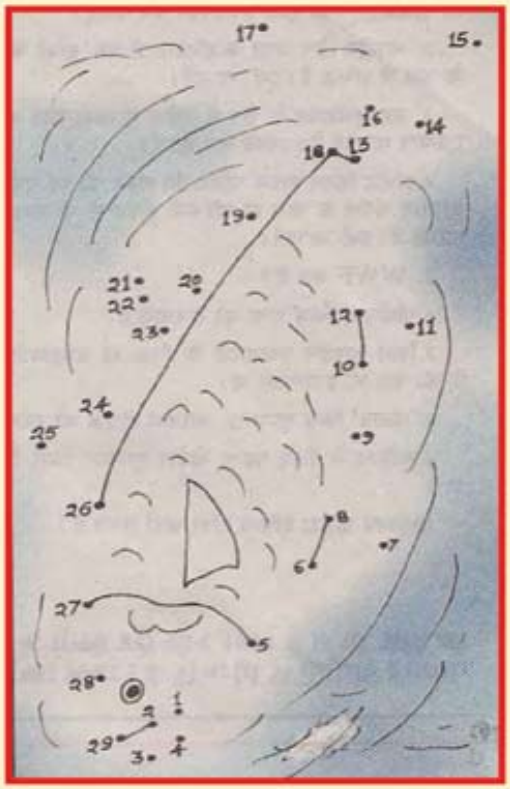

रोचक जानकारी

ऊर्जा के स्रोत

तेल– तेल के पहले कुएं लगभग १५० वर्ष पहले खोदे गए थे परन्तु इनमें से निकले तेल तथा पेट्रोलियम ऊर्जा के सबसे महत्वपूर्ण स्रोत बन चूके हैं। पूरे विश्व की लगभग ४० प्रतिशत ऊर्जा की आपूर्ति तेल में होती है। अधिकतर तेल मध्य-पूर्वी देशों में मिलता जहां से यह पूरे विश्व में पाइपलाइनों तथा टैंकरों द्वारा भेजा जाता है।

कोयला– यह विश्व का दूसरा महत्वपूर्ण ऊर्जा स्रोत है। पूरी आपूर्ति का यह २७ प्रतिशत है। यह अवशेषीकृत ईंधन (फॉसिल फ्यूल) है जो ३०० मिलियन वर्ष पहले मृत दबे पौधों से बना है। विश्व का कोयला भंडार आगे १९२ वर्ष और चलेगा। यह गैस (६७ वर्ष) तथा तेल (४१ वर्ष) से तीन गुना अधिक समय तक चलेगा।

प्राकृतिक गैसें– ऊर्जा का तीसरा महत्वपूर्ण स्रोत है गैसें जो पृथ्वी की सतह के नीचे प्राकृतिक रूप से पैदा होती हैं। यह विश्व की पूरी ऊर्जा का २३ प्रतिशत है। यह गैस मुख्य तौर पर मीथेन और कुछ मात्रा में ईथेन, प्रोपेन तथा अन्य गैसों का सम्मिश्रण है। इसे एकत्रित करके जरुरत वाले स्थानों पर पाइप लाइनों के माध्यम से ले जाया जाता है। यह अत्याधिक प्रदूषण फैलाने वाली कोयला गैस का स्थान ले चुकी है। जो कोयले जलाकर पैदा की जाती है। और प्रयोग में लाई जाती है।

आणविक ऊर्जा– ऊर्जा का चौथा सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है आणविक ऊर्जा (न्यूक्लियर पावर) यह विश्व को समस्त ऊर्जा का ७ प्रतिशत है। एक आणविक प्रतिक्रिया से ताप की अत्याधिक मात्रा उत्सर्जित होती है । यह ताप आगे जाकर पानी तथा अन्य द्रवों को गर्म करता है जिनसे टर्बाईनें चलती हैं। इस प्रकार इस प्रक्रिया में बिजली पैदा की जाती है। विश्व का पहला आणविक ऊर्जा स्टेशन सन १९५६ में इंग्लैण्ड का काल्डर था जो सार्वजनिक प्रयोग हेतु बिजली पैदा करता था।

।। बाल प्रस्तुति ।।

शपथ

कहानी : वर्णिका जैन

रीना जब विद्यालय से लौटी तो उसके चेहरे पर अजीब भाव थे। वह उखड़ी हुई थी। चिढ़ वाला भाव उसके चेहरे पर था। माँ ने उससे कहा– ''बेटी जाओ हाथ मुँह धो लो।'' इतना सुनकर वह बोल पड़ी– ''मेरे हाथ तो साफ सुथरे हैं, घर आते ही आप भी दीदी जैसी यह करो वह करो कहने लगीं।''

इस पर माँ ने उसे गौर से देखा और कहा– ''देखो बेटी, नाश्ते चाय से पहले हाथ साफ करना अच्छी आदत है टी.वी. में नहीं देखा विज्ञापन, जिसमें कीटाणु बताते हैं वह पेट में जाकर बीमार करते हैं।''

रीना ने कहा– ''विद्यालय में कई बच्चे बिना हाथ धोए भोजन करते हैं। उन्हें कुछ नहीं होता। टी.वी. में भी डराने की कहानी आती है।''

माँ ने कहा– ''देखो रीना तुम हर बात पर बहस करती हो। तुम्हें कोई बात तुम्हारे भले के लिए ही कहेंगे। अपने भले के लिए तो नहीं कहेंगे। इसके बाद भी मनचाहा करोगी तो कल से तुम्हारे पिताजी मुझे डॉटेंगे। गलती तुम्हारी और डांट हम क्यों खाएं?''

इतना सुनकर रीना अनचाहे हाथ धोने गई। माँ ने देखा जूते मौजे स्थान पर नहीं रखे थे। बस्ता भी मेज के नीचे था। उसे उठाते समय वह ठीक से बंद न होने से खुल गया। कुछ किताबें और एक नया पेन गिरा। पेन तो रीना का नहीं था। एक कॉपी भी दूसरी थी। उस पर नाम लिखा था वीना माथुर। माँ ने उसे बस्ते में रखा और बस्ते को उसके स्थान पर।

जब रीना हाथ मुँह धोकर आई तो मेज पर नाश्ता रखा था। रीना ने कहा– ''मुझे नाश्ता नहीं करना। दूध भी अच्छा नहीं लगा।'' तब माँ ने कहा– ''दोपहर में क्या खाया था। चाट पकोड़े या तली चीज। भोजन भी पूरा नहीं किया। नाश्ता भी नहीं यह तो अच्छे बच्चों वाली आदत नहीं हैं।'' उसने अनमने मन से कुछ लिया।

उसके बाद माँ ने पूछा– ''यह वीना माथुर कौन है? क्या तुम्हारी सहेली है।''

माँ के सवाल पर रीना चौंकी– ''हाँ है मेरी कक्षा में पर मेरी सहेली नहीं है। वह बहुत अच्छी पढ़ाई करती है। मुझे पसंद नहीं करती। मैं भी उसे पसंद नहीं करती।''

उसका मुंह और फूल गया। माँ ने कहा– ''तो फिर उसकी कॉपी तुम्हारे बस्ते में कैसे आई। और एक पेन भी नया लगता है, वह तो तुम्हारा नहीं है।''

रीना के चेहरे पर कई भाव आए गए। वह संभल कर अटकते हुए बोली–''मुझे क्या मालूम आ गए होंगें भूल से।''

माँ ने कहा– ''हमारे मुंह में बाल या कचरा आए तो कैसे बाहर जाकर साफ करते हैं। ऐसे बस्ते में क्या है, क्या नहीं है का पता रहता है। हाँ सुनो कल शिक्षक पालक संघ की बैठक है। मैं जाऊंगी। वहीं तुम्हारी दीदी माथुर दीदी मेरी सहेली है। उन्हीं की बेटी तुम्हारी कक्षा की वीना माथुर है। मैं उसे अपने हाथों से कॉपी लौटाऊंगी।'' माँ की बात सुनकर रीना की हवाईयां उड़ने लगी।

रीना ने रुआंसे स्वर में कहा– ''माँ मुझे माफ कर दीजिए। वीना ने कॉपी में कक्षा का काम पूरा किया था। मैंने चुपके से कॉपी ले ली। उसने मुझसे कॉपी के बारे में पूछा तो मैंने मना कर दिया। अब आप कॉपी लौटाएंगी तो मैं चोर बन जाऊंगी और यह पेन भी मेरा नहीं है। यह राधिका का है।''

यह सुनते ही माँ को गुस्सा आया। दूसरे पल में ही ममतापूर्ण भाव आ गए। उन्होंने समझाया और कहा– ''बेटी तुमने अपनी गलती मान ली। आगे ऐसा न करोगी। आलस से काम अधूरा रहा। तभी कॉपी ली। काम पूरा कर लो। मुझसे कहो मैं अभ्यास करा दूंगी। नया पेन भी खरीदकर दूंगी। दूसरों का पेन हम क्यों ले। विद्यालय के अधूरे काम और चोरी ने तुम्हें चिढ़चिढ़ी बना दिया है। न खाना–पीना, न सही बोलना। एक गलती कई गलतियाँ करवाती है।''

रीना बोली– ''माँ आप जो कहेगी वहीं करूंगी पर कल बैठक में....''

माँ ने कहा– ''बेटी मैं सब संभाल लूंगी पर तुम आलस नहीं करोगी। खूब पढ़ोगी। किसी की चीज को छुओगी भी नहीं और....।

रीना बात काटते हुए बोली– '' मुझे सब मंजूर है। अब मैं आपकी अच्छी बेटी बनकर दिखाऊंगी।'' माँ ने रीना को सीने से लगा लिया और सिर पर हाथ फेरने लगी। रीना की छलछलाई आंखों में प्रायश्चित तो था ही साथ ही परिवर्तन की शपथ भी थी।

● **महिदपुर (म.प्र.)**

भवालकर स्मृति कहानी
प्रतियोगिता २०१७

प्रिय बच्चो,

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी देवपुत्र के पूर्व व्यवस्थापक स्व. श्री शांताराम जी भवालकर की पावन स्मृति (७ जनवरी) के अवसर पर **भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता** के लिए आपकी स्वरचित बाल कहानियाँ प्रविष्टि के रूप में आमंत्रित हैं। प्रतियोगिता केवल बाल लेखकों के लिए है अतः कहानी के स्वरचित, मौलिक एवं अप्रकाशित होने के प्रमाण पत्र के साथ अपना पूरा नाम कक्षा एवं घर के पते का पिनकोड सहित स्पष्ट उल्लेख अवश्य करें।

आपकी बाल कहानी हमें ३१ मार्च २०१७ तक अवश्य प्राप्त हो जाना चाहिए। कहानी इस पते पर भेजें–

पुरस्कार

प्रथम : १५००/- ● द्वितीय : ११००/- ● तृतीय : १०००/-

५५०/- के दो प्रोत्साहन पुरस्कार

भवालकर स्मृति
कहानी प्रतियोगिता २०१७
देवपुत्र
४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

जाड़ा

कविता : अनंतप्रसाद 'रामभरोसे'

ठण्डी हवा चल रही, सिहरन
पैदा करने वाली
जाड़े की ऋतु शुरु हो गई
कह कर गई दिवाली
धूप गुनगूनी सुबह-सुबह की
अब तो बहुत सुहाती।
नहीं तनिक कूलर पंखे की
हवा किसी को भाती।
स्वेटर कोट और मफलर की
सजने लगीं दुकानें।
बन ठन कर सब बच्चे अब
शाला लगे हैं जाने।
हरी सब्जियाँ ताजे-ताजे
फल जीभर कर खाओ।
इस मौसम ने हमें सिखाया
सेहत खूब बनाओ।

● सागर पाली (उ.प्र.)

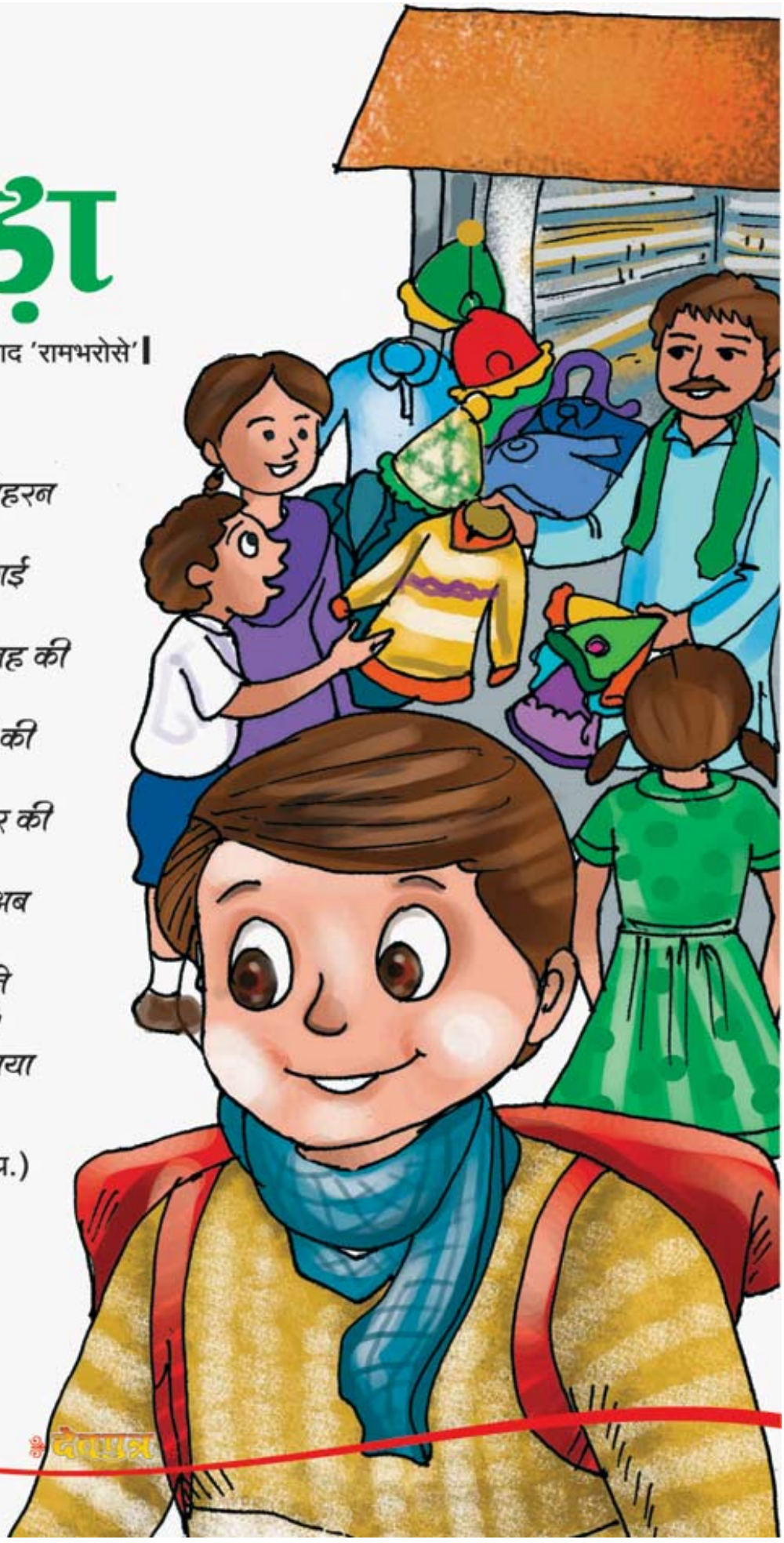

मौसम के फूल

कविता : कृष्ण 'शलभ'

मौसम के आंगन में देखा, कैसा फूल रहे
तरह-तरह के फूल डाल पर झूला झूल रहे
झूम रहा है मौसम अलबेला
कैसा दानी है
अलग-अलग फूलों की अपनी
राम कहानी है
हरि का नाम लिए, चांदी सा-
हर सिंगार खिला
नारंगी डंडी से चिपका
देखा, जहाँ मिला
खुद टूटे, फिर भी पूजा के ये अनुकूल रहे
दादी इसको बड़े प्यार से हर सिंगार कहे
लाल, गुलाबी, पीत, जामुनी
और दूधिया रंग
कहने को कचनार, रंग की-
छबियाँ करती दंग
पाँच पाँखुरी वाली काया
खिल-खिल बतियाती
फूल चढ़ें पूजा में, कलियाँ-
पर खाई जाती
आंगन में बगिया के सारी सुध-बुध भूल रहे
दादी इसको मुसका करके बस कचनार कहे
ये पलाश के फूल, धनक है
क्या नारंगी-लाल
वे फागुन का राजा खेले होली
करें धमाल
तोते जैसी चोंच, पाँखुरी
'किंशुक' भी इक नाम
गाँव पुकारे टेसू राजा
रंगना इसका काम
इसके बिना सुनों फागुन की बात फिजूल रहे
दादी इसको लहक-लहक कर रंग कहार कहे।

• सहारनपुर (उ.प्र.)

एकता में है बल

कहानी : सुधा विजय

नंदन वन में बरगद का एक विशाल और छायादार वृक्ष था जिसमें पक्षियों का बसेरा था। उनका मुखिया बूढा उल्लू ओउली था। पेड़ के दाएँ में आम का फलदार वृक्ष था। जिसमें कोकू बंदर का बड़ा परिवार रहता था। पेड़ के बाएँ और पीपल का वृक्ष था जिसमें नट्टू नेवला और उसका परिवार रहता था।

यहाँ सभी मिल जुलकर रहते थे और बड़े छोटे का भेदभाव नहीं था।

एक दिन रोबदार मोटूमल हाथी अपने कुछ दोस्तों के साथ उधर से गुजरा। उसने अगल- बगल के पेड़ों से अपने लंबे सूँड से पत्ते, टहनी, फल निकालकर खाने लगा। लेकिन जब वह आम के पेड़ के करीब पहुँचा तो बंदरों को घबराहट होने लगी।

कोकू ने चिल्ला कर कहा- ''अरे, मोटूमल कुछ पेड़ हमार लिए भी छोड़ दिया करो।''

मोटूमल को तो अपनी ताकत पर बड़ा गर्व था।

वह इतराकर बोला- ''अगर तुम्हारे पेड़ से खा भी लूँ तो क्या कर लोगे भला?''

उसके ऐसे बोलते ही आसपास के जानवर और पक्षी पेड़ के आगे खड़े हो गए और गुस्से से मोटूमल को देखने लगे।

मोटूमल सबकी एकता देखकर पलभर चौंका फिर यहाँ से खिसकने में ही अपनी भलाई समझी।

उसके जाते ही कोकू बोला-''धन्यवाद मित्रो! मेरा साथ देने के लिए।''

''मिलकर रहने में ही सब की भलाई है''-आउली अपने सर को घुमा-घुमाकर बोला।

''बिल्कुल सही''- नट्टू बोला।

फिर सभी हंसकर अपने-अपने काम में लग गए।

करीब एक सप्ताह बाद कोकू के लड़के मीकू और पीकू पेड़ों पर उछल कूद कर रहे थे और चिड़ियों के बच्चों को छेड़ रहे थे तभी अचानक मीकू ने खेल-खेल में एक आम उठाकर टीनू कौए के दे मारा। आम उसे न लगकर नीचे खेल रहे नट्टू के बेटे पट्टू को लगा। बेचारा पूरे पिलपिले आम से नहा गया।

जहाँ दूसरों की हँसी छूट गई वहाँ खड़ा नट्टू आग बबूला हो उठा। वह तुरंत पेड़ पर चढ़ा और जोरदार तमाचे मीकू और टीनू कौए को जमा दिए।

बच्चे रोते-रोते घर पहुँचे तो उनके परिवार भी बच्चों की तरह लड़ने लगा और आरोप प्रत्यारोप लगाने लगे।

''गलती मीकू की थी तो तुमने टीनू को क्यों मारा?'' कालू कौआ नट्टू पर बरसा।

''अरे भई, आम गलती से हाथ से छूट गया तो कौन सी आफत आ गई'' - मिक्की बंदरिया गुस्से में बोली।

''अगर मेरे बच्चे को चोट लग जाती तो'' -नट्टू ने भी तिलमिला कर कहा।

छोटी बात ने तूल पकड़ ली और आपस में गरमा गरमी

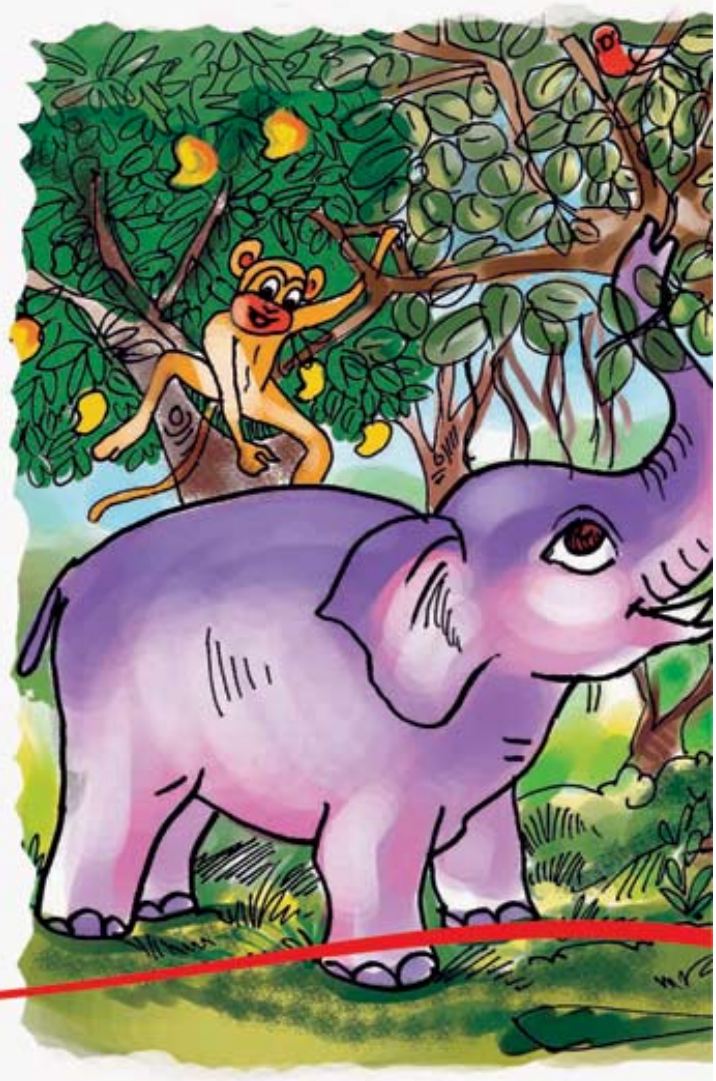

होने लगी। किसी भी प्रकार का बीच बचाव काम न आया और बंदरों, पक्षियों और छोटे जानवरों का अलग झुंड बन गया।

एक दिन परी चिड़िया जब थक माद कर घोंसले पर पहुँची तो एकदम से चीखी–''हाय मेरे अंडे कहाँ गए?''

वह कभी नीचे देखती तो कभी ऊपर। सभी पक्षी उसे सहानुभूति देते हुए बोले–''ऐसा तो कभी नहीं हुआ जरूर ये इन बंदरों की चाल है।''

तभी आउली बोला– '' ऐसा नहीं हैं अब तो बंदरों के दिन भी खराब चल रहे हैं। मोटूमल आए दिन अपने साथियों के साथ आता है और पेड़ के सारे आम चट कर जाता है। बंदरों की चीं तक न निकलती और वे खाने की तलाश में मारे–मारे फिर रहें है।''

तभी गुटर गूं कबूतर बोला– ''तब तो जरूर यह नट्टू नेवले का करतूत होगा।''

आऊली फीकी मुस्कान बिखेरकर बोला–''नट्टू के भी हालत बिगड़ गई है पड़ोस के शैतान चूहे जब चाहे उसके बिल में धावा बोलकर उसका खाना और चीजें चुरा लेते हैं। हमारी लड़ाई से सबसे ज्यादा फायदा हमारे दुश्मनों को हुआ है लगता है।''

आऊली की बातें नट्टू और कोकू भी सुन रहे थे और उन्हें अपनी गलती का अहसास होने लगा था।

अगले दिन नट्टू और कोकू भी सुन रहे थे और उन्हें अपनी गलती अनुभव होने लगी थी। किसी ने सच ही कहा है कि गुस्से में किसी का भला नहीं होता और आँधी के शांत होने के बाद ही उससे हुई हानि का पता चलता है।

अगले दिन नट्टू अपने खोल में सुस्ता रहा था कि उसे चिड़ियों के बच्चों की सीख सुनाई पड़ी। वह बाहर आकर क्या देखता है कि नारु नाग फुसफुसाता हुआ पेड़ पर चढ़ रहा है।

''अच्छा तो अंडा चोर यह है''– नट्टू ने दाँत पीसते हुए बोला और नारु पर हमला बोल दिया। नारु इस अकस्मात् हमले से डर कर भाग खड़ा हुआ।

जल्द ही यह खबर पक्षियों तक पहुँच गई। वे संकोच से आभार तक प्रकट नहीं कर पा रहे थे।

आऊली उन सब में सबसे अनुभवी था।

वह मन ही मन सोचा– ''यही पाट भरने (दूरियाँ कम करने) का सही समय है।''

वह झट उड़कर नीचे गया ओर नट्टू से मिला। कुछ ही पल में दीवार गिर गई और वे दुबारा मित्र बन गए। एक एक करके फिर सारे पंछी नीचे उतर आए और दोस्ती का हाथ बढ़ाया।

आउली आम के पेड़ की तरफ देखा तो पाया कि काकू और दूसरे बंदरों की नजर उन पर है। वह बोला– ''क्यों भाई काकू अब तो गुस्सा थूक दो और हाथ मिला लो?''

काकू मंद–मंद मुस्कुराया और गले मिलने के लिए पेड़ से नीचे आ गया। पीछे–पीछे उसका परिवार भी उतर आया– ''अब जरा आने दो हाथियों को उनके आँखों की खैर नहीं कण्ठफोडवा बोला।

तो तभी कोको बोला– ''मैं तो उन चूहों को मजा चखाऊँगा।''

उनकी बातें सुनकर सभी ठहाका मारकर हँस पड़े।

आंध्र प्रदेश का राज्य पुष्प

जल कुमुदिनी

कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल

भारत के समतल भागों में,
फूल अनोखा मिलता।
देश बाँग्ला, श्रीलंका में,
सभी जगह यह खिलता।
कमल समान फूल अति सुन्दर,
तालाबों में मिलता।
रुके हुए उथले पानी में,
प्रायः दिन में खिलता।
पौधे की मजबूत जड़ें सब,
मिट्टी में घुस जातीं।
और तैरतीं गोल पत्तियाँ,
पानी में उतराती।
धवल श्वेत पंखुड़ियाँ इसकी,
इसका रूप सजातीं
मध्य भाग की पीली केसर,
सबके मन को भाती।
अंग सभी उपयोगी इसके,
काम बहुत से आते।
इनको खाते, दवा बनाते,
धन भी खूब कमाते।

• भोपाल (म.प्र.)

राम की बहादुरी

कथा - चंदा सिंह

चित्रकथा - देवांशु वत्स

कॅरियर के रूप में इतिहास

स्तम्भ : डॉ. जमनालाल बायती

सतीश जब से बम्बई आया है, मनोज से मिलने को उत्सुक था। दोनों मित्र लम्बे समय के बाद मिले थे। बात चली आगे की पढ़ाई की। सतीश ने कहा कि वह इतिहास में एम.ए. करेगा। मनोज को आश्चर्य हुआ। कॅरियर के लिए यह कोई खास विषय तो है नहीं। सतीश बोला– ''यह सही है कि हर कोई इतिहास में एम.ए. कर लेता है, पर उसके सामने उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए और फिर शायद तुम यह नहीं जानते हो कि इतिहासकार ही प्राचीन घटनाओं का संरक्षक है। हाँ, इतिहास हर विश्वविद्यालय में या महाविद्यालय में पढ़ाया जाता है, पर इसका अर्थ यह तो नहीं कि इसकी कोई उपयोगिता ही नहीं। मैं तो इतिहास को ही कॅरियर के रूप में देख रहा हूँ।''

मनोज बोला– ''यह कैसे भैया, जरा समझाना तो?''

आज कल पुरातत्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थानों पर पर्यटकों का तांता लगा रहता है। आदमी निरन्तर काम नहीं कर सकता, काम के बीच–बीच में वह विनोद या विश्राम भी चाहता है। प्राचीन इतिहास पढ़ा ही है, स्थानीय इतिहास पढ़ लूँगा, जानकारी कर लूँगा तथा गाइड बन कर...''

मनोज (बीच ही में)– ''क्या इससे रोटी–रोजी का काम चल जाएगा।

''बड़ा आकर्षण है इस धंधे में, भिन्न–भिन्न ख्यालों के लोगों से मिलकर उनको समझना, उनकी जिज्ञासाओं को शांत करना, उनको सही जानकारी देना...इससे देश की प्रतिष्ठा भी बढ़ती है। मनोज, शायद तुम्हें पता होगा कि विदेशी पर्यटकों से भारत सरकार को होने वाली आमदनी कई गुना बढ़ गई है। अन्य अनुशासनों के समान ही इतिहास जानने वालों के सामने भी वे सब रोजगार के अवसर उपलब्ध रहते हैं, कहाँ मनाही है उनके लिए? इतिहास तथा खास करके प्राचीन इतिहास जानने वाले सुविज्ञ गाइड बनकर इतिहास को कॅरियर के रूप में अपना सकते हैं। यदि आपने पुरातत्त्व में विशेष योग्यता प्राप्त कर ली है, तो संग्रहालयों में भी काम के अवसर प्राप्त हो सकता हैं।''

गाइड (पथ प्रदर्शक) बनने के लिए व्यक्तित्व –

यदि आप इतिहास के अध्येता रहकर गाइड बनना चाहते हैं, तो आपको अपने में कुछ गुणों या लक्षणों का विकास करना होगा। आपको हंसमुख तथा प्रसन्नचित्त रहने की आदत बनानी चाहिए। पर्यटक आपकी सहायता लें या न लें, आपको हर उत्तर शालीनता से मुस्कराते हुए देना चाहिए। आपको एक से अधिक भाषाएँ तो सीखनी ही होगी। आपको कई बार पर्यटक की भाषा नहीं आती हैं, तो अन्य ऐसी भाषा जो पर्यटक जानता है, उस भाषा में उत्तर देना होगा। कई बार दुभाषिए (इन्टरप्रेटर) की भूमिका भी निभानी होगी। आपको स्थानीय रीति–रिवाजों का ज्ञान भी होना चाहिए। कई स्थानों पर प्रवेश प्रतिबन्धित होता है, फूल–पत्तों को नहीं छूना होता है, तो यह सब जानकारी पर्यटकों को देनी होती है, इस तरह नहीं कि वे जानकर नाराज हों, पर उसकी उपयोगिता बताकर उन्हें आश्वस्त करना चाहिए। बद्रीनारायण के रास्ते पर फूलों की घाटी में यदि आप हर किसी फूल को बिना सोचे समझे छू लें, तो लेने के देने पड़ सकते हैं, यदि यही बात आकर्षक रूप में पर्यटकों को बताई जाए, तो वे उसका पालन करेंगे, खतरा मोल लेने से बचे रहेंगे।

विदेशी पर्यटकों के लाभार्थ आपको धारा प्रवाह अंग्रेजी बोलने का अभ्यास होना चाहिए। अंग्रेजी के

सिवाय यदि एक अन्य विदेशी भाषा का ज्ञान आपको है, तो आपकी पौ बारह समझिए। पर्यटकों के पास समय की कमी होती है तथा उपलब्ध समय में अधिकाधिक देखना चाहते हैं, अतः आपको बिना नाराज हुए उनकी प्रसन्नचित्त सहायता करनी चाहिए।

सफल गाइड बनने के लिए यदि संभव हो तो पर्यटन के पाठ्यक्रम में प्रवेश लेकर ज्ञान बढ़ाइए या पत्राचार से पढ़िए। इस पाठ्यक्रम से इस धंधे की कई छोटी-छोटी बातें आप जान सकेंगे, जो आपको इस व्यवसाय में फूलने फलने में मदद करेगी। टूरिज्म पर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ने दो वर्षीय पाठ्यक्रम भी आरम्भ किया है।

गाइड का पारिश्रमिक –

यदि आप राजकीय क्षेत्र में गाइड का काम करते हैं, तो सरकार द्वारा नियत वेतन मिलेगा, अन्य भत्ते तो नियमानुसार मिलेंगे ही, त्रिसूत्री लाभ भी मिलेगा, पर यदि आप स्वतंत्र रूप से यह धंधा अपनाते हैं तो अन्य कई लाभ भी आपके सामने हैं, जो आप द्वारा दिए जाने वाले समय, आपकी व्यवहार कुशलता तथा भाषा ज्ञान पर निर्भर करेगा। पर्यटन विभाग गाइड को कई बार दैनिक पारिश्रमिक के आधार पर कार्य देते हैं। वे १५० से ३०० रुपए प्रतिदिन प्राप्त कर सकते हैं। गाइड लोगों के ट्रेवल एजेन्सी, ख्याति प्राप्त कर सकते हैं। गाइड लोगों को ट्रेवल एजेन्सी, ख्याति प्राप्त अधिक क्षमता वाले होटल, जहाँ पर्यटक ठहरते हैं तथा टैक्सी अड्डों पर कार्य खोजना पड़ता है।

रोजगार की सम्भावनाएँ –

पर्यटकों के लिए गाइड बनने का भविष्य अति उज्ज्वल है। पिछले कई वर्षों में भारत में आने वाले विदेशी पर्यटकों की संख्या निरन्तर बढ़ रही है। जब पर्यटक बढ़ रहे हैं, तो उनको गाइड भी चाहिए ही। यह गाइड का काम रसायन शास्त्र के जानने वाले या मनोविज्ञान के अध्येता तो करने से रहे, इतिहास के विद्यार्थी ही इस कार्य के लिए सर्वाधिक उपयुक्त हैं। गाइड का कार्य प्रायः इतिहास की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण स्थानों पर मिल जाता है, जैसे जयपुर, दिल्ली, आगरा, बनारस, प्रयाग, मुम्बई, कलकत्ता, चेन्नई, हैदराबाद, द्वारिका, खुजराहो, औरंगाबाद, रामेश्वरम् आदि।

आजकल पी-एच.डी. करने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा दी जाने वाली छात्रवृत्ति भी बड़ी आकर्षक है। आप ऐसा करके प्राध्यापक भी बन सकते हैं। पी-एच. डी. के लिए इण्डियन काउन्सिल आफ हिस्टोरिकल रिसर्च भी छात्रवृत्ति देती हैं।

इतिहास के विद्यार्थी के सामने रोजगार का एक और रास्ता यह भी हो सकता है कि वे स्वयं इतिहास लिखें, इतिहास लिखना जीविका के रूप में स्वीकार करें, वह इतिहास जानने के स्त्रोतों का पता लगाएं, सिक्के, टिकट, शिला-लेख पढ़े, खनन द्वारा प्राप्त सामग्री से ज्ञान बढ़ाएं, जनसाधारण से मिलकर, बात कर जनश्रुतियों के आधार पर जाँच कर, प्रामाणिकता पर पहुँचकर इतिहास लिखें। इतिहास की पुस्तकें एक समय छठी कक्षा से एम.ए. तक के पाठ्यक्रम में प्रमुखता से चलती थीं। पाँच-छः दशक पूर्व तक अध्यापकों में लखपति कोई होता ही नहीं था, पर डॉ. ईश्वरी प्रसाद को इसका अपवाद माना जाता था। ऐसा प्रध्यापक लोग बातचीत के समय कहा करते थे। उन्होंने इतिहास की पुस्तकें लिखकर बहुत पैसा कमाया। उनके विद्यार्थी कहते हैं कि उनकी पुस्तकों की रायल्टी उनके वेतन से कहीं ज्यादा होती थी। फिर लेखन कार्य में आयु का भी कोई प्रतिबंध नहीं होता। उन्होंने सेवानिवृत्ति के बाद भी इतिहास जगत को लेखनी के माध्यम से बहुत कुछ दिया और सम्मान के साथ ही अर्थ लाभ भी लिया। इतिहास विषय के शोधकर्त्ता डॉ. गोपीनाथ शर्मा के नाम से परिचित

होंगे। उन्होंने राणा प्रताप पर शोध कर कुछ नए तथ्य जनता के सामने रखे तथा उनका ग्रंथ विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में २, ३ दशक तक निर्बाध रूप से चलता रहा।

शिक्षा स्नातक का पाठ्यक्रम पूरा कर आप इतिहास के स्कूली व्याख्याता या अध्यापक बन सकते हैं। नियमित या पत्राचार से शिक्षा की स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त कर आप इतिहास विषय के अध्यापकों के प्रशिक्षक–प्राध्यापक भी बन सकते हैं।

पुरातत्त्व विभाग में भी नए–नए पदों का सृजन होता रहता है। वहाँ भी रोजगार खोजा जा सकता है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् तथा इण्डियन काउन्सिल आफ हिस्टोरियल रिसर्च से आयोजनों पर अनुदान प्राप्त कर काम पाया जा सकता हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने वाले इतिहास के विद्यार्थियों के पारिश्रमिक के आधार पर मार्गदर्शन किया जा सकता है, कोचिंग कक्षाएँ लगाई जा सकती हैं। इतिहास के महत्त्वपूर्ण विषयों का प्रकरणों पर पत्र–पत्रिकाओं के लिए लेख रचनाएं या शोध पत्र लिखकर आमदनी बढ़ाई जा सकती है।

इतना होते हुए भी यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि इतिहास जानने वालों के लिए रोजगार के अवसर तुलनात्मक रूप से कम हैं, पर साथ ही कुछ क्षेत्र ऐसे हैं, जिनमें प्रशिक्षित कर्मियों की कमी रहती है। उदाहरणार्थ, इतिहास की घटनाओं का जानना, उनका सूचीकरण, सूचनाओं का संग्रहण एवं संरक्षण तथा उनका संदर्भीकरण आदि। इन विषयों के उच्चस्तरीय शैक्षिक उपलब्धि वाले प्रत्याशियों को रोजगार मिल ही जाता है।

शिक्षण संस्थान –

यहाँ इतिहास तथा इतिहास से जुड़े कुछ महत्त्वपूर्ण विषयों की स्नातकोत्तर शिक्षा देने वाली प्रमुख संस्थाओं की सूची दी जा रही है।

०१. प्राचीन इतिहास एवं पुरातत्व
०२. प्राचीन इतिहास तथा संस्कृति
०३. प्राचीन इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्व
०४. प्राचीन इतिहास एवं एशियाई अध्ययन
०५. प्राचीन इतिहास इतिहास तथा पुरातत्व
०६. प्राचीन इतिहास तथा संस्कृति
०७. प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व
०८. प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व
०९. पुरातत्व
१०. पुरातत्व एवं संग्रहालय
११. भारतीय इतिहास एवं संस्कृति
१२. इतिहास (स्नातकोत्तर)

(अ) भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा इतिहास के द्वितीय श्रेणी स्नातकोत्तर परीक्षा उतीर्ण आशार्थियों के लिए एक वर्षीय स्नात्तकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम विभाग में जनपथ, नई दिल्ली स्थिति संस्थान में संचालित किया जाता है।

(आ) राष्ट्रीय पुरातत्व संग्रहालय द्वारा जनपथ, नई दिल्ली में इतिहास के द्वितीय श्रेणी स्नातकोत्तर आशार्थियों के लिए एक वर्ष की अवधि का पुरातत्व संग्रहालय के रख–रखाव सम्बन्धी डिप्लोमा पाठ्यक्रम उपलब्ध है।

(ई) इसी संस्थान द्वारा इतिहास विषय सहित पूर्ण में नियोजित स्नातक कार्मिकों के लिए पुरातत्व संग्रहालय के रख–रखाव संबंधी एक वर्षीय पत्राचार द्वारा प्रणाम पत्र पाठ्यक्रम भी उपलब्ध है। व्यावहारिक कार्यों के लिए कार्मिकों को केवल निम्न स्थानों पर उपस्थित होना पड़ेगा।

आंध्र प्रदेश राज्य पुरातत्व अभिलेखागार, हैदराबाद।

उड़ीसा राज्य पुरातत्व अभिलेखागार, भुवनेश्वर।

राजस्थान राज्य पुरातत्व अभिलेखागार, बीकानेर।

उत्तर प्रदेश पुरातत्व अभिलेखागार, लखनऊ।

● भीलवाड़ा (राज.)

सर्द बस्ते

कविता : डॉ. हरीश निगम

फिर खुले हैं सर्दियों के
सर्द बस्तें!
धुंध की
चादर लपेटे
भोर
कोट-स्वेटर
कंबलों का
शोर,
ओस के मोती जड़े हैं
फूल पत्ते!
हर तरफ
बिखरी छटा
रंगीन
धूप-रेशम-सी
बजाती
बीन,
झूमते से लग रहे हैं
गांव-रस्ते!

● सतना (म.प्र.)

पुस्तक परिचय

बाल साहित्य जगत के जाने माने सर्जक एव संपादक डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल द्वारा बाल साहित्य के प्रख्यात रचनाकारों की विविध विषयों पर वर्गीकृत सुमधुर, सुन्दर, बाल कविताओं को संकलित कर संपादित करके आप बच्चों के लिए बाल कविताओं का खजाना संजो दिया है इन संकलनों में– सूर्यभारती प्रकाशन २५९६ नई सड़क, दिल्ली ११०००६ द्वारा प्रकाशित इन संकलनों में प्रत्येक में ६०–६० रचनाएँ है एवं मूल्य है ३००रु. प्रति संकलन।

पर्यावरण और विज्ञान की कविताएं

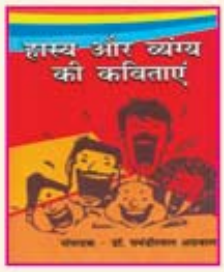

हास्य और व्यंग्य की कविताएं

उपयोगी वस्तुओं की कविताएं

देश प्रेम की कविताएं

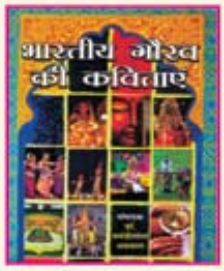

भारतीय गौरव की कविताएं

बाल समस्याओं की कविताएं

शिक्षाप्रद कविताएं

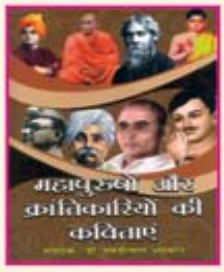

महापुरुषों और क्रातिकारियों की कविताएं

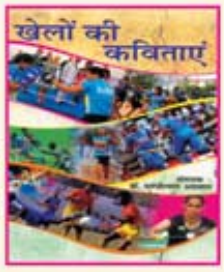

खेलों की कविताएं

जीव जन्तुओं की कविताएं

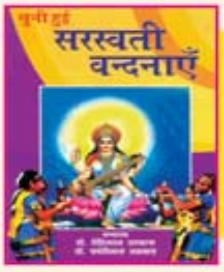

साथ ही– डॉ. रोहिताश्व अस्थाना के साथ संपादित ७१ चुनिंदा कवियों द्वारा लिखी गई सरस्वती वन्दनाएँ।

चुटकुले

◀ मोहनलाल मगो
दिल्ली

कमल - मेरे पास बीस हजार रुपए थे। मैंने सोचा घर पर बिना कुत्ता रखे इतना पैसा नहीं रखना चाहिए।
सोहन - फिर तूने क्या किया?
कमल - मैंने बीस हजार का कुत्ता खरीद लिया।

****

श्रवण - डाक्टर साहब मेरे शरीर में बहुत खुजली होती है।
चिकित्सक- मैं कुछ दवाइयाँ लिख रहा हूँ ले लेना।
श्रवण - क्या मेरी खुजली ठीक हो जाएंगी?
चिकित्सक - नहीं तुम्हारे नाखून बढ़े हो जाएगे, खुजलाने में कष्ट नहीं होगा।

****

चिकित्सक मरीज से - क्या आपको पहले कभी हृदय आघात हुआ है?
मरीज - हाँ, जब आपने पिछली बार बिल दिया था।

****

◀ विष्णुप्रसाद चौहान, ढाबला हरदू (म.प्र.)

पिता (पुत्र से)- बेटा परीक्षा परीणाम का क्या हुआ?
पुत्र - पिताजी, शिक्षक ने कहा है कि इस कक्षा में एक साल और लगाना होगा।
पिता - बेटा, साल तो तू चाहे दो लगा लेना, पर अनुतीर्ण मत होना।

****

छात्र १० मिनिट में ही परीक्षा हॉल से जाने लगा।
शिक्षक - क्या हुआ, उत्तर नहीं आते?
लड़का- वो बात नहीं हैं श्रीमान... मैं जिसके भरोसे आया था, वो खुद मुझसे पूछ रहा है।

॥ बाल प्रस्तुति ॥

चार पहेलियां

दीपक परमार

पक्षी में निर्जीव हूँ मैं
आसमान की करता सैर।
एक बार जो उड़ जाऊं,
तो धरती पर ना रखता पैर।।

मेरा अपना कोई न रूप,
दूसरों के मैं रूप चुराता।
फिर भी मुझे सब अपनाते,
देख-देख कर हैं इतराते।।

पूंछ कटे तो सिया,
सिर कटे तो मित्र।
मध्य कटे तो खोपड़ी,
पहेली यह विचित्र।।

एक महल में रस भरा,
देख उसे मैं तो डरा।
खाएं तो कैसे खाएं,
द्वार-द्वार पर पहरा लगा।।

• गुलाना (म.प्र.)

उत्तर : गुब्बारा, दर्पण, सियार, मधुमक्खी का छत्ता

बाल कवि सम्मेलन

खण्डवा। बाल साहित्य सृजनपीठ, इन्दौर एवं अखिल भारतीय साहित्य परिषद्, खण्डवा के संयुक्त तत्वावधान में स्थानीय माणिक स्मारक वाचनालय सभागार में ७ दिसम्बर सशस्त्र सेना झण्डा दिवस के अवसर पर बाल कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें ३० बच्चों ने काव्य पाठ किया। समारोह की अध्यक्षता श्री सुधीर देशपाण्डे ने की। मुख्य अतिथि डॉ. मुनीश मिश्रा रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री गोपाल माहेश्वरी, श्री गोविन्द शर्मा, श्री रघुवीर शर्मा, श्री कृष्णकुमार उपाध्याय, डॉ. नीरज दीक्षित आदि वरिष्ठ साहित्यकार सम्मिलित हुए। वरेण्य साहित्यकार श्री गोपीनाथ कालभोर ने संरक्षक के रूप में मार्गदर्शन किया। श्री ब्रह्मानंद पाराशर, श्री कपिल डोंगरे, श्री वैभव कोठारी आदि कार्याकर्त्ताओं ने आयोजन को सफल बनाया। संचालन अनन्त डोंगरे ने किया एवं सरस्वती वंदना कु. दिव्यांशी कालभोर ने की।

प्रेरक प्रसंग

पवित्रता

डॉ. श्याममनोहर व्यास

सिक्खों के गुरु गोविन्द सिंह एक बार आनंदपुर साहिब में प्रवचन कर रहे थे। उन्हें प्यास लगी। उन्होंने प्रवचन के बीच कहा– ''कोई मुझे पवित्र हाथों से पानी पिला दें।''

इतने में उनका एक भक्त जमींदार पानी का पात्र लेकर आया और बोला– ''गुरुदेव ! मेरे हाथ पवित्र है, मैंने कभी भी अपने हाथ से कोई घरेलू कार्य नहीं किया है। नौकर–चाकर ही सब काम करते हैं।''

गुरु गोविन्द सिंह ने पानी का पात्र बिना पानी पिए ही वापस रख दिया और बोले– ''जिन हाथों ने कोई कार्य नहीं किया, किसी की सेवा नहीं की, वे पवित्र कैसे हुए?''

गुरुजी का इशारा पाकर उनका एक शिष्य अलग पात्र में पानी लाया और उससे गुरुजी ने अपनी प्यास बुझाई।

● उदयपुर (राज.)

सूरज का रथ

कविता : बालस्वरूप 'राही'

सूरज का रथ बड़ा निराला,
जूते हुए हैं घोड़े सात।
घोड़ा एक लाल भड़कीला,
घोड़ा एक हरा चमकीला,
घोड़ा एक चमाचम पीला,
एक बड़ा ही गहरा नीला,
एक आसमानी बर्फीला,
एक जामुनी छैल-छबीला,
एक संतरे सा चटकीला,
हर घोड़ा बेहद फुर्तीला।
बड़े नियम से ये चलते हैं,
सुनते नहीं किसी की बात।
सर्दी में दौड़ें ये सरपट,
गर्मी में करते कुछ झंझट,
पी जाते हैं नदियाँ गटगट,
कुछ जल भाप बनाते झटपट,
कहीं गिरते ओले पटपट
बादल हंस कहते-पीछे हट,
पर्वत से करते हैं खटपट,
सातों ही घोड़े हैं नटखट!
इनको रोक नहीं पाती हैं,
आए आँधी या बरसात।

● दिल्ली

डाक पंजीयन आय.डी.सी./एम.पी./६२३/२०१५-२०१७

आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

देवपुत्र

बच्चों की मनभावन पत्रिका

बचपन के आंगन में संस्कारों की रंगोली सजाता है

▶ संस्थानों/विद्यालयों के लिए १० से अधिक अंक की सामूहिक सदस्यता हेतु वार्षिक सदस्यता	११०/-
▶ एक अंक	१५/-
▶ वार्षिक सदस्यता	१५०/-
▶ त्रैवार्षिक सदस्यता	४००/-
▶ पंचवार्षिक सदस्यता	६००/-
▶ आजीवन सदस्यता	११००/-

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, प्रेस कॉम्पलेक्स, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित

प्रधान संपादक - कृष्णकुमार अष्ठाना